ओ३म्

पाक्षिक
परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५८ अंक -११ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जून (प्रथम) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी में चतुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति का विवरण

(विशेष विवरण)

अथर्ववेद की समाप्ति पर "ब्रह्म पारायण महा यज्ञ की पूर्णाहुति श्री राजाधिराज शाहपुराधीश के द्वारा दी गई

तत्पश्चात निम्नांकित महानुभावों के यज्ञ सम्बन्ध में संक्षिप्त भाषण हुए

१—श्री पं० आर्यमुनिजी (महा महोपाध्याय)

२— " " ब्रह्मदत्तजी (जिज्ञासु)

३— " " द्विजेन्द्रनाथजी (शास्त्री)

४ — महर्षि दयानन्दजी की भगिनी के पौत्र श्री पोपट लालजी का आर्य जनता को प्रदर्शन कराया गया और उन्होंने अपने किये हुए कुछ "वृत्त" सुनाये

५— श्री राजाधिराज शाहपुराधीश

६— "बुद्धदेवजी विद्यालंकार लाहौर

७ — " महात्मा सुमेर सिंह जी (गु. कु. विरालसी)

८ — " आत्मा राम जी अमृतसरी

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : ११
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: ज्येष्ठ कृष्ण, २०७३
कलि संवत्: ५११७
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२११२७०

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

जून प्रथम २०१६

अनुक्रम

१. मूर्तिपूजा और ऋषि दयानन्द	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०८
३. सांई बाबा मत	सत्येन्द्र सिंह आर्य	१५
४. अमेरिका - एक विहंगम दृष्टि	डॉ. धर्मवीर	१८
५. छः वैदिक दर्शनों का मतैक्य है	वैद्यनाथ शास्त्री	२३
६. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		२७
७. पुस्तक परिचय	आचार्य सोमदेव	२८
८. जिज्ञासा समाधान-११२	आचार्य सोमदेव	३३
९. संस्था-समाचार		३६
१०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-३५		४०
११. आर्यजगत् के समाचार		४२

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

मूर्तिपूजा और ऋषि दयानन्द

पिछले अंक का शेष भाग.....

१. पुराभवं पुरा भवा पुराभवश्च इति पुराणं पुराणी पुराणः।

२. वहाँ ब्राह्मण पुस्तक जो शतपथादिक हैं, उनका ही नाम पुराण है तथा शंकराचार्य जी ने भी शारीरक भाष्य में और उपनिषद् भाष्य में ब्राह्मण और ब्रह्म विद्या का ही पुराण शब्द से अर्थ ग्रहण किया है।

३. तीसरा देवालय और चौथा देव पूजा शब्द है। देवालय, देवायतन, देवागार तथा देव मन्दिर इत्यादिक सब नाम यज्ञशालाओं के ही हैं।

४. इससे परमेश्वर और वेदों के मन्त्र उनको ही देव और देवता मानना उचित है। अन्य कोई नहीं।

(-स्वामी दयानन्द, प्रतिमा पूजन विचार, पृ. ४८३-४८५, दयानन्द ग्रन्थमाला)

ऋषि दयानन्द के जीवन में मूर्तिपूजा की अवैदिकता और अनौचित्य पर वाद-संवाद, शास्त्रार्थ, भाषण, चर्चा, परिचर्चा तो बहुत मिलती है, परन्तु एक आश्चर्यजनक प्रसंग भी मिलता है। स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों और मान्यताओं को लेकर कोलकाता की आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा का एक अधिवेशन २२ जनवरी रविवार सन् १८८१ को कोलकाता विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में भारत के ३०० विद्वानों की उपस्थिति में हुआ, जिसमें स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों को सर्वसम्मति से अस्वीकार किया गया। इसमें आश्चर्य और महत्त्व की बात यह है कि इस सभा में पूर्व पक्षी के रूप में स्वयं स्वामी दयानन्द या उनका कोई प्रतिनिधि उपस्थित नहीं था, न ही निमन्त्रित किया गया था और न ही किये जाने वाले प्रश्नों के उनसे उत्तर माँगे गये थे। यह कार्य नितान्त एकपक्षी और सभा की ओर से ऋषि दयानन्द की मान्यता को अस्वीकार करते हुए पाँच उत्तर स्वीकृत हुए थे।

आर्यसमाज के आरम्भिक काल के एक और सुयोग्य लेखक बाबा छज्जूसिंह जी द्वारा लिखित व सन् १९०३ ई. में प्रकाशित Life and Teachings of Swami Dayananda पुस्तक की भी एतद्विषयक कुछ पंक्तियाँ यहाँ देना उपयोगी रहेगा। विद्वान् लेखक ने लिखा है-

"While Swami Dayananda was at Agra, a Sabha called the Arya Sanmarg Sandarshini Sabha, was established at Calcutta, with the object of having it decided and settled, once for all, by the most distinguished representatives of orthodoxy in the land (that could be got hold of for the purpose of course) that Dayanand's views on Shraddha, Tiraths, Idol-Worship, etc. were entirely unorhodox and unjustifiable. Sanskrit scholars rising to the number of three hundred responded to the call of the Sabha, and a grand meeting composed of the local men and of the outsiders, came off in the Senate Hall on 22nd January, 1881. It is significant that not one of the numerous distinguished pandits present thought of suggesting or moving that the man upon whom the Sabha was going to sit in judgement, should be condemned or acquitted after he had been fully heard. It may be urged that the Sabha was not in humour to acquit Dayanand under any circumstances, but still he should have been permitted to have his say before he was condemned.

Surely, one man could be dealt with very well by and assemblage so illustrious and so erudite. But the Pandits and their admirers were wise in their generation. Dayanand, though ine, had proved too many for still a more learned and august gathering at Benares."1

(1. Life and Teachings of Swami Dayananda, Page. 39, Part-II)

आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा कलकत्ता और स्वामी दयानन्द सरस्वती का सिद्धान्त- सबको ज्ञात हो कि २२ जनवरी सन् १८८१ ई. को रविवार के दिन सायंकाल सीनेट हॉल कलकत्ता में वहाँ के श्रीमन्त बड़े-बड़े लोगों और प्रसिद्ध पण्डितों ने एकत्र होकर यह सभा दयानन्द सरस्वती जी की कार्यवाहियों पर विचार करने के उद्देश्य से आयोजित की थी। इस सभा का विस्तृत वृत्तान्त हम **'सार सुधा निधि'** पत्रिका से नीचे अंकित करते हैं। इस सभा के व्यवस्थापक पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न जी कॉलेज के प्रिंसिपल थे। इस सभा में पण्डित तारानाथ तर्कवाचस्पति, जीवानन्द विद्यासागर बी.ए. और नवदीप के पण्डित भुवनचन्द्र विद्यारत्न आदि बंगाल के लगभग तीन सौ पण्डित और कानपुर के पण्डित बाँके बिहारी वाजपेयी और यमुना नारायण तिवारी और वृन्दावन के सुदर्शनाचार्य जी और तञ्जौर (मद्रास प्रेसीडैन्सी) के पण्डित राम सुब्रह्मण्यम शास्त्री जिनको सूबा शास्त्री भी कहते हैं, पधारे थे। इनके अतिरिक्त श्रीमन्त लोगों में वहाँ के सुप्रसिद्ध भूपति ऑनरेबल राजा यतीन्द्र मोहन ठाकुर सी.एस.आई., महाराज कमल कृष्ण बहादुर, राजा सुरेन्द्र मोहन ठाकुर, सी.एस.आई., राजा राजेन्द्रलाल मलिक, बाबू जयकिशन मुखोपाध्याय, कुमार देवेन्द्र मलिक, बाबू रामचन्द्र मलिक, ऑनरेबल बाबू कृष्णदास पाल, लाला नारायणदास मथुरा निवासी, राय बद्रीदास लखीम बहादुर, सेठ जुगलकिशोर जी, सेठ नाहरमल, सेठ हंसराज इत्यादि कलकत्ता निवासी सेठ उपस्थित थे। यद्यपि पण्डित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर व बाबू राजेन्द्रलाल मित्र एल.एल.डी. ये दोनों महानुभाव पधार नहीं सके थे, तथापि इन महानुभावों ने सभा की कार्यवाही को जी-जान से स्वीकार किया। जिस समय ये सब सज्जन सीनेट हॉल में एकत्र हुए, तब पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न जी ने इस सभा के आयोजन करने का विशेष प्रयोजन बता करके निम्नलिखित प्रश्न प्रस्तुत किये-

प्रश्न १- पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न जी ने पहला प्रश्न यह किया कि वेद का संहिता भाग जैसा प्रामाणिक है ब्राह्मण भाग भी वैसा ही प्रामाणिक है अथवा नहीं? और मनुस्मृति धर्मशास्त्र के समान अन्य स्मृतियाँ मानने योग्य हैं अथवा नहीं। पृ. ६३९

उत्तर- इस प्रकार बहुत-सी युक्तियों से यह बात सिद्ध होती है कि संहिता के समान ब्राह्मण भाग तथा मनुस्मृति के समान विष्णु याज्ञवल्क्य आदि समस्त स्मृतियाँ मानने योग्य हैं तथा यही सब पण्डितों का सर्वसम्मत मत है। पृ. ६४१

प्रश्न २- पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न ने दूसरा प्रश्न यह किया कि शिव, विष्णु, दुर्गा आदि देवताओं की मूर्तियों की पूजा और मरणोपरान्त पितरों का श्राद्ध आदि और गंगा, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों व क्षेत्रों में स्नान तथा वास, शास्त्र के अनुसार उचित है अथवा अनुचित? पृ. ६४१

उत्तर- .....अत: देवताओं की मूर्ति और उनकी पूजा करना सब श्रुतियों और स्मृतियों के अनुसार उचित है। पृ. ६४५

....अत: यह बात सुस्पष्ट होकर निर्णीत हो गई कि मृतकों का श्राद्ध श्रुति व स्मृति दोनों के अनुसार विहित है। पृ. ६४६

.....अत: गंगा आदि का स्नान और कुरुक्षेत्र आदि का वास श्रुति और स्मृति दोनों से सिद्ध है। पृ. ६४६

प्रश्न ३- पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न ने तीसरा प्रश्न यह किया कि अग्निमीळे. इत्यादि मन्त्र में अग्नि शब्द से परमात्मा अभिप्रेत है अथवा आग? पृ. ६४७

उत्तर- ....अत: इस मन्त्र में अग्नि शब्द का अर्थ जलाने वाली आग ही है। पृ. ६४७

प्रश्न ४- पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न जी ने चौथा प्रश्न यह किया कि अग्निहोत्र इत्यादि यज्ञ करने का प्रयोजन (उद्देश्य) जल, वायु की शुद्धि है अथवा स्वर्ग की प्राप्ति?

पृ. ६४७

उत्तर- यजुर्वेद के मन्त्रों से अग्निहोत्र आदि यज्ञ स्वर्ग साधक हैं। पृ. ६४७

प्रश्न ५- पं. महेशचन्द्र जी ने पाँचवाँ प्रश्न यह किया कि वेद के ब्राह्मण भाग का निरादर करने से पाप होता है अथवा नहीं? पृ. ६४७

उत्तर- इसका उत्तर देते हुए पं. सुब्रह्मण्यम शास्त्री ने कहा कि यह तो प्रथम प्रश्न के उत्तर में कह चुके हैं कि ब्राह्मण भाग भी वेद ही हैं, फिर ब्राह्मण भाग का अपमान करने से मानो वेद का ही अपमान हुआ।.... पृ. ६४७

उसके पश्चात् पण्डितों की सम्मति लेनी आरम्भ हुई। निम्नलिखित पण्डितों ने सर्वसम्मति से हस्ताक्षर कर दिये। पृ. ६४८

इन प्रश्नों में दूसरा प्रश्न मूर्तिपूजा से सम्बन्धित है। इसमें सुब्रह्मण्यम शास्त्री ने मूर्ति पूजा के समर्थन में ऋग्वेद के मन्त्र का उल्लेख करके बताया- शिवलिङ्ग की पूर्ति की पूजा स्थापना आदि से पूजन का फल होता है, मन्त्र है-

तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त रुद्र यत्ते जनिम चारु चित्रम्।।

-ऋग्वेद ५/३/३

उसके अतिरिक्त रामतापनी, बृहज्जाबाल उपनिषद् में शिवलिंग की पूजा करना लिखा है। मनुस्मृति में लिखा है-

नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम्।
देवताभ्यर्चनं चैव, समिदाधानमेव च।।

-मनु. २/१७६

इसके अतिरिक्त देवल स्मृति, ऋग्वेद गृह्य परिशिष्ट बौधायन सूत्र आदि के प्रमाण दिये हैं।

इन प्रमाणों के उत्तर में लेखक ने स्वामी दयानन्द का जो पक्ष रखा है, उसका मुख्य आधार है- वेद स्वतः प्रमाण हैं और शेष ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं, अतः उनकी प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध नहीं है। फिर भी जिन प्रमाणों को दिया गया है, वह प्रसंग मूर्ति पूजा पर घटित नहीं होता। स्वामी दयानन्द ने सामवेद के ब्राह्मण के पाँचवें अनुवाक के दसवें खण्ड में स्पष्ट लिखा है- सपरन्दिव० आदि यहाँ देवताओं की मूर्ति का प्रसंग ब्रह्म लोक का है। पृ. ६४३

मूर्तिपूजा के पक्ष में प्रमाण देते हुए मनु को उद्धृत किया है और कहा गया है- दो ग्रामों के मध्य मन्दिरों का निर्माण करना चाहिए तथा उसमें प्रतिमा स्थापित की जानी चाहिए-

सीमासन्धिषु कार्याणि देवतायतनानि च।

- ८/२४८

संक्रमध्वजयष्टीनां प्रतीमानां च भेदकः।
प्रतिकुर्याच्च तत् सर्वं पञ्च दद्याच्छतानि च।।

- ९/२८५

मूर्तिपूजा के समर्थन में दिये गये तर्कों पर लेखक ने स्वामी दयानन्द का पक्ष निम्न प्रकार से उपस्थित किया है-

स्वामी दयानन्द जिन शास्त्रों का प्रमाण मूर्तिपूजा के खण्डन में देते हैं, मूर्तिपूजा का समर्थन करने वालों को उन्हीं शास्त्रों से मूर्तिपूजा के समर्थन के प्रमाण देने चाहिए जो नहीं दिये गये।

ऋग्वेद के जिस मन्त्र का अर्थ शिवलिंग की स्थापना किया है, वह मर्जयन्त शब्द मृज धातु से बना है जिसका अर्थ शुद्ध करना, पवित्र करना, सजाना, शब्द करना है, अतः इसका अर्थ पूजा करना कभी नहीं है, अपितु परमेश्वर की स्तुति करना है।

जो गाँव की सीमा में देवताओं के मन्दिर बनाने का विधान है, इसी प्रसंग में सीमा पर तालाब, कूप, बावड़ी आदि के वाचक शब्दों का प्रयोग किया गया है, अतः मन्दिर की बात नहीं है। उत्तर काल में इन स्थानों पर मन्दिर बनने लगे, वह शास्त्र विरुद्ध परम्परा है।

अन्त में मूर्ति पूजा वेद विरुद्ध है, इसको बताने के लिए वेद मन्त्रों के प्रमाण दिये गये हैं।

मूर्तिपूजा के निषेध में प्रमाण- अतः उपर्युक्त युक्तियों से यह तो भली-भाँति निश्चित हो गया कि मूर्ति-पूजा उचित नहीं और अब उसके खण्डन में वेदों तथा उपनिषदों के कुछ प्रमाण देकर इस विषय को समाप्त करते हैं-

''न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः।''

अर्थ- उस परमात्मा की कोई प्रतिमा नहीं, उसका नाम अत्यन्त तेजस्वी है।

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।

अर्थ- वह परमात्मा सर्वव्यापक, सर्वद्रष्टा, सर्वशक्तिमान्, शरीररहित, पूर्ण, नस-नाड़ी के बन्धन से रहित, शुद्ध है तथा पापों से पृथक् है।

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसंभूतिमुपासते।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः।।

अर्थ - जो लोग प्रकृति आदि जड़-पदार्थों की पूजा करते हैं, वे नरक में जाते हैं तथा जो उत्पन्न की हुई वस्तुओं की पूजा करते हैं वे इससे भी अधिक अन्धकारमय नरक में जाते हैं।

तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।

जो बुद्धिमान् उसे आत्मा में स्थित देखते हैं, उन्हीं को शाश्वत सुख प्राप्त होता है, औरों को नहीं।

ततो तदुत्तरतरं तदरूपमनामयम्।
य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे दुःखमेवापि यान्ति।।

जो सृष्टि व सृष्टि के उपादान कारण से उत्कृष्ट है, वह निराकार व दोषरहित है। जो उसको जानते हैं, उनको अमर जीवन प्राप्त होता है और दूसरे लोग केवल दुःख में फँसे रहते हैं।

तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति,
नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।

अर्थ- उसी के ज्ञान से मृत्यु के पंजे से छुटकारा होता है और कोई मार्ग ध्येय धाम का नहीं है।

किसी देवता की उपासना भी उचित नहीं है। शतपथ ब्राह्मण में जहाँ तैंतीस देवताओं की व्याख्या की है (और उन्हीं तैंतीस के आज तैंतीस करोड़ बन गये हैं और उस सूची के पूरा होने के पश्चात् जो उसमें और गुगा पीर जैसे समय-समय पर सम्मिलित होते रहे हैं, वे इनसे अतिरिक्त हैं) वहाँ भी परमात्मा के अतिरिक्त किसी अन्य की पूजा विहित नहीं रखी, प्रत्युत उसका खण्डन किया है।

आत्मेत्येवोपासीत। स योऽन्यमात्मनः प्रियं ब्रुवाणं
ब्रूयात्प्रियं रोत्स्यतीश्वरो ह तथैव स्यात्।
योऽन्यां देवतामुपास्ते न स वेद।
तथा पशुरेव स देवानाम्।

परमेश्वर जो सबका आत्मा है, उसकी उपासना करनी चाहिये। जो परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य को प्यारा अर्थात् उपास्य समझता है, उसे जो कहे कि तू प्रिय के विरह में दुःख में पड़ेगा, वह सत्य पर है। जो और देवता की उपासना करता है, वह वास्तविकता को नहीं जानता। वह निश्चित रूप से बुद्धिमानों में पशु सदृश है।

(दयानन्द ग्रन्थमाला, पृ. ६६५)

टिप्पणियाँ

१. द्वा सुपर्णा., पृ. २७७ मुण्डक उपनिषद्, एकादशोपनिषद्, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, प्रकाशक- विजयकृष्ण लखनपाल, दिल्ली, संस्करण-२००६

२. अव्यक्ताद् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्त सञ्ज्ञके।।
- गीता, अध्याय ८, श्लोक १८, गीता प्रेस

३. पृ. ११२, प्रश्नोपनिषद्, एकादशोपनिषद्, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, संस्करण-२०००, प्रकाशक-विजयकृष्ण लखनपाल, दिल्ली

४. **न तस्य प्रतिमा अस्ति।** -यजु. ३२ मन्त्र-३, परोपकारिणी सभा, अजमेर, पृ.

५. यज् वेदपूजा संगतिकरण दानेषु। -धातु पाठ, पाणिनी मुनि

६. वातो देवता चन्द्रमा देवता।-प्रतिमा पूजन विचार, दयानन्द ग्रन्थमाला, भाग १,परोपकारिणी सभा, संस्करण-२०१२

७. मातृदेवो भव, पृ. २३०, तैत्तिरीयोपनिषद्, एकदशोपनिषद्, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, संस्करण २०००, प्रकाशक- विजयकृष्ण लखनपाल, दिल्ली

८. यजु. ४०/९, सत्यार्थप्रकाश, पृ. ३७०, दयानन्द ग्रन्थमाला, भाग १, प्रकाशक- परोपकारिणी सभा, संस्करण-२०१२

९. पृ. ८१३, उपदेश मञ्जरी, दयानन्द ग्रन्थमाला, भाग २, प्रकाशक- परोपकारिणी सभा, अजमेर, संस्करण-२०१२

१०. पृ. ३७३, दयानन्द ग्रन्थमाला भाग १, प्रकाशक- परोपकारिणी सभा, संस्करण-२०१२

११. पृ. ३७३, दयानन्द ग्रन्थमाला भाग १, दयानन्द ग्रन्थमाला, प्रकाशक- परोपकारिणी सभा अजमेर, संस्करण-२०१२

१२. अन्धन्तमः प्रविशन्ति। -यजु. ४०/९

१३. केन उपनिषद्। पृ. २३०, तैत्तिरीयोपनिषद्, एकादशोपनिषद्, सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, संस्करण २०००, प्रकाशक- विजयकृष्ण लखनपाल, दिल्ली

- डॉ. धर्मवीर

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

परोपकारिणी सभा का शोध व प्रकाशन :- परोपकारिणी सभा अपने कर्त्तव्य पालन में निरन्तर आगे बढ़ रही है। जितनी आशायें मिशन का भविष्य लगाये हुए है, उसमें न्यूनता का रह जाना स्वाभाविक ही है। यह तथ्य तो इस घड़ी सबके सामने है कि जितने ऊँचे, कर्मठ व लोकप्रिय विद्वान् व सहयोगी युवक ब्रह्मचारी महात्मा इस सभा के पास हैं, इतने इस समय किसी भी संस्था के पास नहीं है। बारह मास और पूरा वर्ष प्रचार के लिए देश भर से माँग बनी रहती है।

वैदिक धर्म पर कहीं भी वार हो झट से आर्य जनता सभा प्रधान डॉ. धर्मवीर जी को पुकारने लगती है। विधर्मी जब वार-प्रहार करते हैं, तब हर मोर्चे पर परोपकारी ने विरोधियों से टक्कर ली। भारत सरकार ने पं. श्रद्धाराम पर पुस्तक छपवा कर ऋषि पर निराधार घृणित वार किये। पं. रामचन्द्र जी आर्य के झकझोरने पर भी कोई शोध प्रेमी और संस्था उत्तर देने को आगे न निकली। परोपकारिणी सभा ने 'इतिहास की साक्षी' पुस्तक छपवाकर नकद उत्तर दे दिया।

श्री लक्ष्मीचन्द्र जी आर्य मेरठ जैसे अनुभवी वृद्ध ने पूछा, ''पं. श्रद्धाराम का ऋषि के नाम लिखा पत्र कहाँ है? मिला कहाँ से और कैसे मिला?''

उन्हें बताया गया कि अजमेर आकर मूल देख लें। उसका फोटो छपवा दिया है। श्रीमान् विरजानन्द जी व डॉ. धर्मवीर जी के पुरुषार्थ से यह पत्र मिला है। इतिहास की साक्षी के अकाट्य प्रमाणों का कोई प्रतिवाद नहीं कर सका।

अब उ.प्र. की राजधानी से सभा को सूचना मिली है कि मिर्जाई अपने चैनल से पं. लेखराम व आर्यसमाज के विरुद्ध विष वमन कर रहे हैं। सभा उनकी भी बोलती बन्द करे। इस सेवक से भी सम्पर्क किया गया है। आर्य समाज क्या करता है? यह भी देखें। कौन आगे आता है? कोई नहीं बोलेगा, तो सभा अवश्य युक्ति, तर्क व प्रमाणों से उत्तर देगी। वैसे एक ग्रन्थ इसी विषय में छपने को तैयार है। प्रतीक्षा करें।

श्री हरबिलास सारडा का ग्रन्थ :- वृद्ध अवस्था में श्रीमान् हरबिलास सारडा ने अंग्रेजी में बड़ा खोजपूर्ण पठनीय ऋषि जीवन लिखा था। तब वे भागदौड़ न कर सकते थे। न जाने प्रूफ पढ़ने वाले अथवा अनुभवहीन सहयोगियों के कारण उनके ग्रन्थ में कई भयङ्कर भूलें या मुद्रण दोष रह गये। अब माननीय सत्येन्द्रसिंह जी आर्य तथा आदरणीया ज्योत्स्ना जी ने भरपूर श्रम करके इसे दोष रहित बनाने का कर्त्तव्य निभाया है। इस सेवक को भी इस नाम स्थान आदि के चुभने वाले दोष दूर करने का कार्य सौंपा गया। सारड़ा जी ने एक महत्त्वपूर्ण मासिक 'विद्याप्रकाशक' के प्रमाण दिये हैं। यह दुर्लभ फाईल हमारे पास है। इसका नाम ही अशुद्ध छप गया है। पादरी टी.जे. स्काट का नाम अशुद्ध छप जाता है। प्रूफ रीडर यह चूक नहीं पकड़ पाते, इस संस्करण में सभा ने महत्त्वपूर्ण वाक्यों व घटनाओं को मुखरित (Highlight) करने का प्रयास किया है। गुरु विरजानन्द जी के जन्म का वर्ष सबसे पहले हरबिलास जी ने ही ठीक-ठीक दिया था। फिर डॉ. रामप्रकाश जी ने व मैंने भी इसकी पुष्टि की। दुर्भाग्य से अब भी आर्य समाज के तथाकथित इतिहासकार भूलसुधार का साहस नहीं करते।

आचार्य बलदेव जी चल बसे:- जनवरी मास में यह सेवक आचार्य जी का पता करने रोहतक गया था। मैंने तभी मित्रों को बता दिया था कि अब आचार्य जी कभी-भी प्रस्थान कर सकते हैं। तपस्या की बातें करने वाले बहुत देखे हैं, परन्तु आचार्य बलदेव जी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, विज्ञानानन्द जी की परम्परा के तपस्वी थे। पानी में आटा घोल कर भी भूख मिटाई। चने चबाकर भी रात्रि को सो जाते थे। मेरे सामने नरवाना में एक सवा फुट के वाचाल ने आपका अपमान किया। आप फिर भी शान्त रहे। उनका अपमान हम लोग न सहन कर सके।

आर्य समाज को कई ऊँचे जाने-माने विद्वान् दे गये। जब मैं पता करने गया तो मुझसे बहुत अनुरोध किया कि दो-चार दिन यहाँ हमारे पास रहें। मैं आवश्यक सामाजिक कार्यों के कारण न रुक सका। अब उनकी बात न मानने

का दु:ख मरते दम तक सताता रहेगा।

लक्ष्मीनारायण जी बैरिस्टर :- ऋषि के पत्र-व्यवहार में एक ऋषिभक्त युवक लक्ष्मीनारायण का भी पत्र है। आप कौन थे? आपका परिवार मूलत: उ.प्र. से था। लाहौर पढ़ते थे। इनके पिता श्री आँगनलाल जी साँपला जिला रोहतक में तहसीलदार थे। आपके चाचा श्रीरामनारायण भी विद्वान् उत्साही आर्य युवक थे। लन्दन के आर्य समाज के संस्थापक मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण जी ही थे। इंग्लैण्ड में शवदाह की अनुमति नहीं थी। वहाँ चम्बा के राजा का एक नौकर (चन्दसिंह नाम था) मर गया। राजा तब फ्राँस में मौज मस्ती करने गया था। सरकार ने शव को लावारिस घोषित करके दबाने का निर्णय ले लिया।

श्री लक्ष्मीनारायण जी ने दावा ठोक दिया कि आर्यसमाज इस भारतीय का वारिस है। हम अपनी धर्म मर्यादा के अनुसार शव का दाह-कर्म करेंगे। वह शव लेने में सफल हुए। मुट्ठी भर आर्यों ने शव की शोभा यात्रा निकाली। अरथी पर 'भारतीय नौकर की शव दाह यात्रा' लिखा गया। सड़कों पर सहस्रों लोग यह दृश्य देखने निकले। प्रेस में आर्य समाज की धूममच गई। महर्षि के बलिदान के थोड़ा समय बाद की ही यह घटना है।

आर्यसमाज के सात खण्डी इतिहास के प्रत्येक खण्ड में इन्हें मुम्बई के श्री प्रकाशचन्द्र जी मूना का चाचा बताया गया है। यह एक निराधार कथन है। इसे विशुद्ध इतिहास प्रदूषण ही कहा जायेगा।

लक्ष्मीनारायण ऋषि के वेद भाष्य के अंकों के ग्राहक बने। आप पं. लेखराम जी के दीवाने थे। उनके लिखे ऋषि-जीवन के भी अग्रिम सदस्य बने थे। आप एक सच्चे, पक्के, स्वदेशी वस्तु प्रेमी देशभक्त थे। इंग्लैण्ड में आपके कार्यकाल में आर्य समाज की गतिविधियों के समाचार आर्य पत्रों में बड़े चाव से पढ़े जाते थे। ये सब समाचार मेरे पास सुरक्षित हैं। आपने मैक्समूलर को भी समाज में निमन्त्रण दिया, परन्तु वह आ न सका। और पठनीय सामग्री फिर दी जायेगी।

इतिहास की धरोहर:- आर्यसमाज में यहाँ-वहाँ शोध, पुरातत्त्व, अलभ्य साहित्य संग्रहालय के नाम पर केन्द्र स्थापित करने की योजनाएँ बनाकर गत कुछ वर्षों में कई घोषणायें की गईं। कहाँ-कहाँ केन्द्र बने? यह सबके सामने हैं। परोपकारिणी सभा इस दिशा में चुपचाप अपना पुस्तकालय बचाकर उसकी सुरक्षा में लगी रही। पं. शान्तिप्रकाश जी, स्वामी सूर्यानन्द जी शाजापुर, म.प्र., श्री सुधीरकुमार जी गुप्त, पं. रामचन्द्र जी आर्य के पुस्तक भण्डार सभा को प्राप्त हुए। इस सेवक का पुस्तकालय भी धीरे-धीरे अजमेर पहुँच रहा है। अब मान्य सत्येन्द्र जी की धरोहर अजमेर पहुँच गई है। मई-जून तक मैं और अलभ्य स्रोत पहुँचा दूँगा। जो पत्रिकायें अब कहीं प्राप्य नहीं, जिनके नाम भी लोग भूल गये हैं, वे अब परोपकारिणी सभा के पास सुरक्षित हो जायेगी। विद्वानों के मार्गदर्शन में नई पीढ़ी इनका लाभ उठाये। हम भी ऐसे दुर्लभ दस्तावेज बेच सकते थे। हमने ऐसा करना पाप जानकर महर्षि के नाम पर ऋषि को सभा को ही सम्पदा भेंट कर दी है।

मिशनरियों के प्रहार व प्रश्न:- पश्चिम से दो खण्डों में श्री राबर्ट ई. स्पीर नाम के एक ईसाई विद्वान् का एक ग्रन्थ छपा था। इसने महर्षि की भाषा को तीखा बताते हुए यह लिखा है कि आर्य विद्वानों की भाषा में तीखेपन का दोष लगाया है। ऋषि के तर्कों की मौलिकता व सूक्ष्मता को भी लेखक स्वीकार करता है। लेखक के पक्षपात को देखिये, उसने अन्य मत-पंथों के लेखकों व वक्ताओं के लेखों व पुस्तकों में आर्य जाति व आर्य पूर्वजों के प्रति अन्य मत-पंथों की अभद्र भाषा का संकेत तक कहीं नहीं दिया। ऋषि ने और आर्य विद्वानों ने कभी असंसदीय भाषा का प्रयोग नहीं किया। कठोर भाषा का प्रयोग किया तो क्यों?

विधर्मियों की भाषा के कितने दिल दुखाने वाले उदाहरण दिये जायें?

'सीता का छनाला' पुस्तक इस पादरी को भूल गई। मिर्जा गुलाम अहमद के ग्रन्थों में वर्णमाला के क्रम से कई लेखकों ने गालियों की सूचियाँ बनाई है। एक सिख विद्वान् ने उसकी एक पुस्तक को 'गालियों का शब्दकोश' लिखा है। पढ़िये मिर्जा की पंक्तियाँ:-

लेखू मरा था कटकर जिसकी दुआ से आखिर
घर-घर पड़ा था मातम वाहे मीर्जा यही है

हमारे शहीद शिरोमणि को 'लेखू' लिखकर जिस

घटिया भाषा का प्रयोग किया है, वह सबके सामने हैं। एक पादरी के बारे लिखा है:-

इक सगे दीवाना लुधियाना में है
आजकल वह खर शुतर खाना में है

अर्थात् लुधियाना में एक पागल कुत्ता है। वह आजकल गधों व ऊँटों के बाड़े में है। कहिये कैसी सुन्दर भाषा है। 'वल्द-उलजना' यह अश्लील गाली उसने किस को नहीं दी। आश्चर्य है कि पादरी जी को ये सब बातें भूल गई। ऋषि पर दोष तो लगा दिया, उदाहरण एक भी नहीं दिया। ईसाई पादरियों ने क्या कमी छोड़ी? इनके ऐसे साहित्य की सूची भी बड़ी लम्बी है। कभी फिर चर्चा करेंगे।

दुर्भाग्य से आर्यसमाज में नये-नये शोध प्रेमी तो बढ़-चढ़ कर बातें बनाने वाले दिखाई देते हैं, परन्तु मिर्जाइयों के चैनल का नोटिस लेने से यह शोध प्रेमी क्यों डरते हैं? यह पता नहीं। कोई बात नहीं। हमारी हुँकार सुन लीजिये:-

रंगा लहू से लेखराम के रस्ता वही हमारा है।
परमेश्वर का ज्ञान अनादि वैदिक धर्म हमारा है।।

इनको जान प्यारी है। ये लोग नीतिमान हैं।

ऋषि-जीवन पर विचार:- परोपकारी में तो समय-समय पर ऋषि-जीवन की विशेष महत्त्वपूर्ण शिक्षाप्रद घटनाओं को हम मुखरित करते ही रहते हैं, सभा द्वारा ऐसी कई पुस्तकें भी प्रकाशित प्रचारित हो रही हैं। ऋषि-जीवन का पाठ करिये। चिन्तन करिये। ''इसे पुस्तक मानकर मत पढ़ा करें। यह यति योगी, ऋषि, महर्षि का जीवन है।'' यह पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का उपदेश है। क्या कभी जन-जन को सुनाया बताया:-

१. ऋषि के सबसे पहले और सबसे बड़े भक्त, जो अन्त तक सेवा करते रहे, वे छलेसर के ठाकुर मुकन्दसिंह, ठा. मुन्नासिंह व ठाकुर भोपालसिंह जी थे।

२. अन्तिम वेला में सबसे अधिक सेवा ठाकुर भोपालसिंह जी ने की। ला. दीवानचन्द जी ने लिखा है कि जोधपुर में जसवन्तसिंह, प्रतापसिंह और तेजसिंह एक बार भी पता करने नहीं पहुँचे थे।

३. ऋषि जीवन चरित्र में जिस परिवार के सर्वाधिक सदस्यों की बार-बार चर्चा आती है, वह छलेसर का यही कुल था। स्वदेशी का बिगुल ऋषि ने छलेसर से ही फूँका था। आर्यो! जानते हो कि ऊधा ठाकुर भोपाल सिंह जी का पुत्र था।

४. ऋषि के पत्र-व्यवहार में इसी परिवार की-इसी त्रिमूर्ति की बार-बार चर्चा है, दूसरा ऐसा परिवार मुंशी केवलकृष्ण जी का हो सकता है, परन्तु उनके नाम हैं, प्रसंग थोड़े हैं।

५. आर्यो! जानते हो दिल्ली दरबार में ऋषि के डेरे की व्यवस्था छलेसर वालों ने ही की थी। ठा. मुकन्दसिंह आदि सब दिल्ली में महाराज के साथ आये थे।

६. हमारे मन्त्री ओम्मुनि जी की उत्कट इच्छा थी। हम यत्नशील थे। लो देखो! कूप ही प्यासे के पास आ गया। ठाकुर मुन्नासिंह जी की वंशज डॉ. अर्चना जी इस समय ऋषि उद्यान में पधारी हैं। आप गुरुकुल में दर्शन पढ़ रही हैं। सम्पूर्ण आर्यजगत् के लिए डॉ. अर्चना की यह ऋषि भक्ति व धर्म भाव गौरव का विषय है।

ऐसी चूक मत करिये:- सभा के साहित्य तथा परोपकारी में बताया जा चुका है कि ऋषि के संघर्षमय जीवन में सब से पहली बड़ी घटना काशी शास्त्रार्थ थी और दूसरी बड़ी घटना हरिद्वार का कुम्भ मेला (सन् १८७९ का) था। इस मेले में पं. श्रद्धाराम को ला. भोलानाथ ने बुलवाया था। पं. श्रद्धाराम ने कई षड्यन्त्र रचे और कई पापड़ बेले, परन्तु उसे मिला क्या? भोलानाथ उसे छोड़ गया। भोलानाथ के साथ ही उसका साथी पं. गोपाल शास्त्री जम्मू भी श्रद्धाराम जी को छोड़ गये, ऋषि भक्त बन गये। श्रद्धाराम स्वयं बदल गया। उसका हृदय परिवर्तन हो गया।

और तो और पं. श्रीगोपाल मेरठ वाला भी खुलकर ऋषि का गुणगान करने लगा। सारा वैर-विरोध भूलकर उसने ऋषि के पावन चरित्र व विद्वत्ता पर अपने एक ग्रन्थ में एक उत्तम कविता दी है। परोपकारिणी सभा के इस शोध को घर-घर पहुँचा दो। इसे मुखरित करो। कुछ सज्जनों ने तो ये सब घटनायें समझी ही नहीं। कई ग्रन्थों में इन पर 'हटावट' की कैंची चल गई। न जाने ऐसा क्यों किया गया?

पादरियों की शंका या आपत्ति :- तीनों पदार्थों को अनादि माना जावे तो फिर ईश्वर का जीवन व प्रकृति पर नियन्त्रण कैसे हो सकता है? इस आपत्ति का कई बार

उत्तर दिया जा चुका है। आयु के बड़ा-छोटा होने से नियन्त्रण नहीं होता। अध्यापक का शिष्यों पर, बड़े अधिकारी का अपने अधीनस्थ कर्मचारियों पर नियन्त्रण अपने गुणों व सामर्थ्य से होता है। प्रधानमन्त्री युवक हो तो क्या आयु में बड़े नागरिकों से बड़ा नहीं माना जाता? उसका आदेश सबके लिये मान्य होता है, अत: यह कथन या आपत्ति निरथर्क है।

इसी प्रकार जीव की कर्म करने की स्वतन्त्रता के आक्षेप को समझना चाहिये। विकासवाद की दुहाई देने वालों का यह आक्षेप भी व्यर्थ है। जब जड़ प्रकृति में Law of Natural selection प्राकृतिक निर्वाचन का नियम कार्य करता है, तो निर्वाचन की स्वतन्त्रता तो आपने मान ली। निर्वाचन वही करेगा, जो स्वतन्त्र है। मनोविज्ञान का सिद्धान्त कहता है you can take horse to water but you cannot make him take the water. अर्थात् घोड़े को आप जल के पास तो ले जा सकते हैं, परन्तु जल पीने के लिए वह बाधित नहीं किया जा सकता। इसमें वह स्वतंत्र है। जीव की स्वतन्त्रता तो व्यवहार में पूरा विश्व मान रहा है। वे दिन गये जब सब अल्लाह की इच्छा चलती थी या शैतान दुष्कर्म करवाता था, फिर तो कोई मनुष्य न पापी माना जा सकता है और न ही महात्मा।

पं. लेखराम ने कहाँ लिखा है?:- एक बन्धु ने पूछा है- क्या पुस्तक मेले में आपसे किसी ने चाँदापुर शास्त्रार्थ विषय में पण्डित लेखराम का प्रमाण माँगा? मैंने निवेदन किया कि बौद्धिक व्यायाम करके प्रसिद्धि पाना और बात है, सामने आकर शंका निवारण करवाना, गम्भीरता से सत्य को जानना दूसरी बात है। कोई पूछता तो मैं बता देता कि पं. लेखराम जी की 'तकजीबे बुराहीन अहमदिया' के आरम्भिक पृष्ठों पर ही मेरे कथन की पुष्टि में स्पष्ट शब्दों में लिखा पैरा मिलेगा। माता भगवती जब ऋषि जी से मुम्बई में मिली थी, तब वह ३८ वर्ष की थी। यह कृपालु तो उसे 'लड़की' बनाये बैठे हैं। इन्होंने सनातनी विद्वान् पं. गंगाप्रसाद का ऋषि महिमा में लिखा अवतरण, हजूर जी महाराज लिखित ऋषि-जीवन, निन्दक जीयालाल लिखित ऋषि का गुणगान और मिर्जा कादियानी द्वारा महर्षि की हत्या या बलिदान के प्रमाण तो न जाने और न उनका लाभ उठाया। उनको एक काम मिला है, करने दीजिये।

हिन्दू संस्कृति-हिन्दू धर्म व हिन्दू जाति:- देशभर में जातिवादी घातक आन्दोलन चल रहे हैं। घर वापसी की बात करके हिन्दू जाति के वाकशूर रक्षक घरों में जा बैठे हैं। जाति बन्धन तोड़ने व शुद्धि के लिये क्या किया? आर्यसमाज से कुछ सीखते तो कुछ जाति हित होता। आर्यसमाज में भी इनके भाषण सुनकर एक ने शुद्धि आन्दोलन के कर्णधारों के कुछ नाम उगलते हुए किसी 'ऋषिदेव' का नाम लिखा बताते हैं। आर्यसमाज में ऋषि देव नाम का कोई व्यक्ति शुद्धि का प्रचारक नहीं रहा। कल्पित इतिहास का क्या लाभ। मेहता जैमिनि, पं. भोजदत्त, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, पं. शान्तिप्रकाश, पं. चमूपति, पं. नरेन्द्र जी हैदराबाद तो इन अति उत्साही लेखकों को भूल गये या पता नहीं।

टी.वी. के भगवानों की आरतियाँ व महिमा सुन-सुनकर रोना आता है। देश में बेकारी फैली है। भगवानों के मुकट व सिंहासनों के समाचार पढ़िये। भगवान बढ़ रहे हैं और उनकी सम्पदा बढ़ रही है। जातीय रोग बढ़ रहे हैं। आर्यसमाज राजनेताओं को महिमा मण्डित करने के लिए सम्मेलन सजाता रहता है। कुछ वक्ता सरकारी भार बनकर मन्त्रियों का गुणगान करके आर्यसमाज का अवमूल्यन कर रहे हैं। **- वेद सदन, अबोहर- १५२११६**

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेष कर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ जून, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

सांई बाबा मत

– सत्येन्द्र सिंह आर्य

वर्ष १८७५ ईसवी में आर्य समाज की स्थापना के समय भारत में लगभग एक सहस्र मत-मतान्तर विद्यमान थे। उनमें से कुछ की समीक्षा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में की है। आर्य समाज जैसे सुधारवादी आन्दोलन के आरम्भ होने के बाद भी नये-नये मतों का उद्भव होता रहा है। सांई बाबा मत भी उन्हीं में से एक है। २० वीं शताब्दी के आरम्भ में इस मत का उदय महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले में हुआ।

मध्य-युग (भक्ति काल) में सांई शब्द 'स्वामी' के अर्थ में, 'ईश्वर' के लिए, किसी को आदरपूर्वक सम्बोधित करने के लिए प्रयोग में होता रहा है। जैसे किसी कवि ने लिखा-

सांई इतना दीजिए जा में कुटम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, पथिक न भूखा जाय।।

परन्तु इस शब्द से किसी मत-पंथ का बोध नहीं होता था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त और बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में शिरडी (महाराष्ट्र) की एक मस्जिद के मुस्लिम फकीर की प्रसिद्धि सांई-बाबा के नाम से हो गयी और उसके नाम से एक नया पंथ चल पड़ा। सांई-बाबा के नाम से मन्दिर बन गये और वही मुस्लिम फकीर हिन्दुओं की अन्ध भक्ति के कारण अवतार, भगवान और न जाने क्या-क्या बन गया।

स्वार्थ की पराकाष्ठा के कारण व्यक्ति कम परिश्रम से कम समय में माला-माल होना चाहता है। मत-पंथों का धन्धा इस हेतु सर्वाधिक अनुकूल सिद्ध होता है। आन्ध्र प्रदेश के अनन्तपुर जिले में चित्रवती नदी के किनारे पुट्टुपर्ती ग्राम में वर्ष १९२६ में जन्में 'सत्यनारायण राजू' नाम के बालक ने भी युवा होते-होते यही धन्धा अपनाया और ये ''श्री सत्य सांई बाबा'' नाम से विख्यात हो गये। 'सांई बाबा' और ''श्री सत्य सांई बाबा''-ये दोनों नाम एक जैसे ही हैं। अगर ये सत्य नारायण राजू (पुट्टुपर्ती वाले सांई बाबा) अपने को किसी अन्य नाम से पुजवाते तो कुछ कठिनाई भी आती और प्रसिद्धि प्राप्त करने में कुछ समय भी लगता। वह पुराना 'सांई बाबा' चला-चलाया नाम था, इन्होंने कह दिया मैं ही आठ वर्ष पहले 'सांई बाबा' था, उसी का अवतार मैं हूँ।

(शिरडी वाले सांई बाबा की सन् १९१८ में मृत्यु हो गयी थी।) अब ये अवतार बन गये और पुजने लगे। वेद-विद्या के प्रचार-प्रसार के अभाव में देश में भेड़-चाल है। लोग सत्य, सदाचार, न्याय की तुलना में चमत्कार की ओर को खिंचे चले जाते हैं। इन्होंने भी हाथ की सफाई दिखाई, अपने झबरे बालों में से भभूत, हाथ-घड़ी निकालने का चमत्कार दिखाया, कुछ गप्पें अपने बारे में प्रचारित करायीं और सिद्ध बन गये।

शिरडी वाले तो सिर्फ सांई-बाबा ही थे और उनका अवतार होने का सिक्का चल गया था। पहले वाले सांई बाबा के भक्तों ने उन्हें (नये बाबा को) मान्यता नहीं दी, तो इनके भक्तों ने क्या किया, कि सांई बाबा नाम तो उस तथा कथित अवतार का ले लिया तथा ''सत्य'' शब्द जो ''सत्यनारायण राजू'' नाम बचपन का था, उससे ले लिया। ''श्री '' अपनी ओर से सम्मान की दृष्टि से लगाया और बन गए पूरे ''श्री सत्य सांई बाबा''। यह इसलिए भी किया कि पहले वाले सांई बाबा को असत्य सिद्ध करने की आवश्यकता ही न रही। भक्तों ने स्वयं ही कहना आरम्भ कर दिया कि सत्य तो ये ही हैं। ऊपर से चमत्कारों का प्रोपैगेण्डा आरम्भ कर दिया जैसे कि इनके चित्र से शहद का टपकना, राख का झड़ना, लाईलाज बीमारियों का ठीक होना। ठगी करने के लिए ये ढोंग आवश्यक हैं ही। पुट्टुपर्थी वाले बाबा (अभी साल दो साल पूर्व ही इनकी मृत्यु हुई है) माडर्न महात्मा अपने को प्रदर्शित करते थे और स्वयं को बाल ब्रह्मचारी बताते थे, परन्तु विवाहित थे और इनकी पत्नी हैदराबाद के एक अस्पताल में नर्स थी। यही अवतारी बाबा पहले औरगांबाद (मराठवाड़ा) में पागलों की भाँति आवारागर्दी करते फिरते थे। यह सब विवरण सार्वदेशिक पत्रिका के १६ सितम्बर सन् १९७३ के अंक में प्रकाशित हुआ है। बड़ी राशि के

लेन-देन के सिलसिले में इसी बाबा के विरुद्ध न्यायालय में मुकदमा भी चलाया गया था, जिसमें कुछ रकम तो बाबा को वापस करनी पड़ी थी, परन्तु अर्काट जिले के दो भाइयों श्री टी.एम. रामकृष्ण तथा मुथुकृष्ण के लगभग एक लाख रुपये डकारने में ये अवतारी पुरुष? सफल हो गये थे।

लगभग एक डेढ़ शताब्दी के अन्दर काफी सीमा तक एक जैसे ही नाम वाले इन दो सांई बाबाओं के नाम पर सांई-बाबा मत चल निकला और ऐसा चला कि अपनी पन्थाई दुकानदारी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता देखकर एक जगत् गुरु शंकराचार्य तक भी व्यथित हो गए।

सांई बाबा मत का कोई ऐसा प्रामाणिक ग्रन्थ दृष्टि में नहीं आया, जिसमें इस पंथ के ईश्वर, धर्म, सृष्टि-निर्माण, आत्मा-परमात्मा विषयक आध्यात्मिक विवेचन, स्वर्ग, नरक, मुक्ति जैसे विषयों की चर्चा, सुसन्तान के निर्माण, सुखी गृहस्थी बनने के बुद्धि-गम्य सुझाव दिये गये हों। जो पुस्तकें उपलब्ध हैं, वे इस प्रकार की हैं, जैसे-''अवतार गाथा,'' 'सांई बाबा का चमत्कारी व्यक्तित्व', 'A Man of Miracles', ''श्री सांई सच्चरित्र'' (श्री सांई बाबा की अद्भुत जीवनी और उनके अमूल्य उपदेश) आदि। पूर्व-उल्लिखित ''श्री सांई सच्चरित्र'' पुस्तक मूल रूप से मराठी में है और इसके लेखक हैं, कै. गोविन्दराव रघुनाथ दाभोलकर (हेमाडपन्त)। पुस्तक के हिन्दी संस्करण के अनुवादक श्री शिवराम ठाकुर हैं। इस पुस्तक का जो संस्करण मुझे प्राप्त हो सका, वह सन् २००७ में प्रकाशित हुआ १८ वां संस्करण है, जिसकी १ लाख प्रतियाँ मुद्रित हुई हैं, ऐसा उल्लेख है और उससे पहले संस्करण (१७ वाँ) की प्रतियाँ ढाई लाख बतायी गयी हैं। यदि वास्तव में पुस्तक की इतनी बड़ी संख्या में प्रतियाँ छपी हैं, तो यह विस्मयकारी है। पुस्तक में ५१ अध्याय हैं।

पुस्तक में सांई बाबा के जीवन की चमत्कारों से परिपूर्ण झाँकिया आदि से अन्त तक भरी पड़ी हैं। मत-पंथ कोई भी हो बिना चमत्कारों के टिक नहीं सकता। ईसाइयत, इस्लाम, जैन, बौद्ध, चारवाक, ब्रह्माकुमारी, राधास्वामी आदि सभी मत अपने-अपने संस्थापकों के जीवन में काल्पनिक चमत्कारों की गाथाएँ जोड़कर ही खड़े रह सके हैं। महाराज मनु प्रोक्त धर्म के १० लक्षणों से उनका कुछ लेना-देना नहीं होता। सांई बाबा मत भी उसी प्रकार चमत्कारों एवं आडम्बरों का गोरख धन्धा है। सांई को भगवान, भगवान का अवतार, अद्भुत चामत्कारिक शक्तियों से सम्पन्न अलौकिक दिव्य आत्मा सिद्ध करने के लिए आकाश-पाताल एक किये गये हैं। 'श्री सांई सच्चरित्र' पुस्तक के आरम्भ में प्रथम अध्याय में वन्दना करने का उपक्रम करते हुए लेखक सांई का पूरा अवतारीकरण करने का प्रयत्न करता है। उन्हीं के शब्दों में-

''पुरातन पद्धति के अनुसार प्रथम श्री गणेश को साष्टांग नमन करते हैं, जो कार्य को निर्विघ्न समाप्त कर उसको यशस्वी बनाते हैं और कहते हैं, कि श्री सांई ही गणपति है।''

....''श्री सांई भगवती सरस्वती से भिन्न नहीं है, जो कि स्वयं ही अपना जीवन संगीत बयान कर रहे हैं। ब्रह्मा, विष्णु और महेश, जो क्रमश: उत्पत्ति, स्थिति और संहारकर्त्ता हैं और कहते हैं कि सांई और वे अभिन्न हैं। वे स्वयं ही गुरु बनकर भवसागर से पार उतार देंगे।''

सांई बाबा को अन्तर्यामी (सर्वज्ञ) सिद्ध करने के लिए लेखक ने एक घटना का उल्लेख किया है। लेखक शिरडी पहुँचे और वहाँ साठेवाड़ा नाम के स्थान पर अपने एक शुभचिन्तक श्री काक साहेब दीक्षित (जो सांई बाबा के बड़े भक्त और नजदीकी थे) के साथ इस आशय की बात कर रहे थे कि गुरु धारण करने की आवश्यकता नहीं है। इस पर काका साहेब ने उन्हें कहा ''भाई साहब, यह निरी विद्वत्ता छोड़ दो। यह अहंकार तुम्हारी कुछ भी सहायता न कर सकेगा।'' इस प्रकार दोनों पक्षों के खण्डन-मण्डन में एक घण्टा व्यतीत हो गया और बात अनिर्णीत ही रही। लेखक महोदय आगे कहते हैं-''जब अन्य लोगों के साथ मैं मस्जिद गया तब बाबा ने काका साहेब को सम्बोधित कर प्रश्न किया कि साठेवाड़ा में क्या चल रहा था? किस विषय में विवाद था? फिर मेरी ओर दृष्टिपात कर बोले कि इन 'हेमाडपन्त' ने क्या कहा। ये शब्द सुनकर मुझे अधिक अचम्भा हुआ। साठेवाड़ा और मस्जिद में पर्याप्त अन्तर था। सर्वज्ञ या अन्तर्यामी हुए बिना बाबा को विवाद का ज्ञान कैसे हो सकता था?''

बाबा की इस सर्वज्ञता? या अन्तर्यामीपन की पोल एक पौराणिक सद्गृहस्थ-सन्त भक्त रामशरण दास (पिलखुआ) ने इस प्रकार खोली है-

''सांई साहब मुसलमान हैं। वह भी अपने को अतवार तथा और भी न जाने क्या-क्या बतलाया करते थे। बहुत से मनुष्य इनके चंगुल में फँस गये थे, परन्तु कुछ दिन हुए एक लुहारिन ने इनके अतवारपने की सब पोल खोल दी। सांई जी को जब सब लोग बड़ी श्रद्धा के साथ घेरे हुए थे, तो उस समय एक लुहार भी बड़ी श्रद्धा के साथ आपको अपने मकान पर लिवा लाया। लुहार की स्त्री लुहारिन भी वहीं पर उनके पास बैठ गई। कुछ देर में सांई साहब ने एकाएक बहुत क्रोध में आकर बुरा-बुरा मुँह बनाकर अपना डंडा उठाकर धड़ाम से एक किवाड़ में दे मारा और कहा कि 'जा साले!' सबने हाथ जोड़कर पूछा कि सांई साहब क्या बात है? सांई साहब ने अपने को त्रिकाल दर्शी कहते हुए कहा कि अरब में इस समय एक कुत्ता काबे को नापाक कर रहा था। मुझे वह दिख रहा था। मैंने उसे यहीं पर बैठे हुए दे मारा है। यह सुनकर सब लोग हाथ जोड़कर और भी ज्यादा श्रद्धा करने लगे।''

''लुहारिन होशियार थी, उसने कहा कि सांई साहब मैं आपके लिए चावल बनाकर लाती हूँ, आप बैठे रहना। वह अन्दर गई और चावल बनाये, जब चावल बन चुके, तो उसने एक बर्तन में पहले बूरा (चीनी) रखा और फिर बूरा के ऊपर चावल इस तरह से रखे कि जिससे वह बूरा बिल्कुल ही न दिखे। फिर उस बर्तन को लाकर उसने सांई साहब के सामने रख दिया। लुहारिन चावल रखकर एकदम अन्दर मकान में चली गई। सांई साहब ने समझा कि वह मेरे लिए बूरा लेने गयी है। जब बहुत हो गयी तो उन्होंने उसे बुलाया और कहा कि बूरा क्यों नहीं लाई? उसने कहा कि बूरा तो घर में है ही नहीं। साँई साहब ने क्रोध में भरकर कहा कि हम बिना बूरा के चावल नहीं खाते। इतना कहते ही लुहारिन उठी और सांई साहब की दाढ़ी पकड़कर दे मारा और उनका सब सामान उठाकर बाहर फेंक दिया। पूछने पर उसने कहा कि भला इसे हजारों कोस का कुत्ता तो दिखता है, पर बिल्कुल सामने रखा चावलों से ढका बूरा नहीं दिखता। सब यह देखकर चकित हो गये और सबने उसके ढोंग को समझ लिया।''

सद्गृहस्थ-सन्त, भक्त रामशरणदास-पृष्ठ ३८५-८६

साधु, फकीर, सन्त, संन्यासी तो जमीन पर पैर रखकर सामान्य जन की भाँति चलते फिरते हैं, परन्तु उनके भक्त और अनुयायीगण उनको समुद्र की सतह पर चला देते हैं, आकाश में पक्षियों की भाँति उड़ता हुआ दिखा देते हैं। सांई बाबा के साथ भी लेखक ने ऐसा ही किया। ''श्री सांई सच्चरित्र'' पुस्तक के पृष्ठ १६ पर श्री सांई ने निम्नलिखित अति सुन्दर उपदेश दिया-

''तुम चाहो कहीं भी रहो, जो इच्छा हो, सो करो, परन्तु यह सदैव स्मरण रखो कि जो कुछ तुम करते हो, वह सब मुझे ज्ञात है। मैं ही समस्त प्राणियों का प्रभु हूँ और घट-घट में व्याप्त हूँ।''

''मेरे ही उदर में सब जड़ व चेतन प्राणी समाये हुए हैं। मैं ही समस्त ब्रह्माण्ड का नियंत्रणकर्त्ता व संचालक हूँ। मैं ही उत्पत्ति स्थिति और संहारकर्त्ता हूँ। मेरी भक्ति करने वालों को कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।''

''बाबा की विशुद्ध कीर्ति का वर्णन निष्ठापूर्वक श्रवण करने से भक्तों के पाप नष्ट होंगे। अत: यह मोक्ष प्राप्ति का भी सरल साधन है। सत्य युग में शम तथा दम, त्रेता में त्याग, द्वापर में पूजन और कलियुग में भगवत कीर्तन ही मोक्ष का साधन है।''

शेष भाग अगले अंक में....

जैसे वेद के वेत्ता विद्वान् लोग वेदानुकूल मार्ग से परमेश्वर को जानकर उत्तम ज्ञान से उसका सेवन करते हैं वैसे ही जगदीश्वर सब को उपासनीय अर्थात् सेवन करने के योग्य है, वैसे ज्ञान के विना ईश्वर की उपासना कभी नहीं हो सकती क्योंकि विज्ञान ही उसकी अवधि है।

- महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४१

सब व्यवहार करने वालों को चाहिये कि जो मनुष्य जिस काम में चतुर हो उसको उसी काम में प्रवृत्त करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२०

जब तक मनुष्य सुख-दु:ख, हानि और लाभ की व्यवस्था में परस्पर अपने आत्मा के तुल्य दूसरे को न जानते तब तक पूर्ण सुख को प्राप्त नहीं होते, इस से मनुष्य लोग श्रेष्ठ व्यवहार ही किया करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४०

अमेरिका – एक विहंगम दृष्टि

– डॉ. धर्मवीर

लगभग एक करोड़ भारतीय अमेरिका में रहते हैं। लाखों भारतीय प्रतिवर्ष अमेरिका की यात्रा करते हैं। अमेरिका के सम्बन्ध में हमारे देशवासियों की जानकारी बहुत है, फिर भी गत ११ मार्च को अमेरिका आने पर यात्रा में कुछ बातों ने मेरा ध्यान खींचा। वैसे बातें तो बहुत छोटी हैं, परन्तु किसी व्यक्ति के लिये जिज्ञासा को शान्त करने या उत्सुकता उत्पन्न करने के योग्य हो सकती हैं, ऐसी कुछ बातें यहाँ प्रस्तुत हैं–

सबसे पहले इस देश में आने पर जिस बात ने चौंकाया, वह थी हमारे यहाँ किसी बिजली के बटन को प्रकाश के लिये नीचे करना होता है। यहाँ बिजली, पंखा, दरवाजा सभी को खोलने, बन्द करने के लिये बटन को नीचे से ऊपर करना पड़ता है। ऐसा क्यों है? इसको कोई नहीं बता सका, परन्तु ऐसा होता है। एक ही बटन से बिजली का प्रकाश कम–अधिक भी किया जा सकता है। यहाँ बल्ब ही देखने में आते हैं, दण्ड (ट्यूबलाईट) नहीं।

भारत में बायीं ओर चलने की परम्परा है। गाड़ी में चालक का स्थान भी दायीं ओर होता है। भारत में इंग्लैण्ड के कारण ऐसी परम्परा आई है। वहाँ पर सड़क के बायीं और चलने का नियम है, परन्तु अमेरिका में सड़क के दायीं और चलते हैं। यहाँ की बस, कार, ट्रक आदि में चालक का स्थान बायीं ओर होता है, परन्तु डाक बाँटने वाली गाड़ी में चालक दायीं ओर बैठता है, क्योंकि गाड़ी में बैठे–बैठे वह घर के सामने सड़क के किनारे पर लगे डिब्बे में पत्र आदि डालता जाता है।

छोटी सड़क बड़ी सड़क से मिलती है, तो वहाँ पर स्टॉप लिखा होता है। यहाँ पर आगे कोई वाहन न होने पर भी रुकना होता है, चाहे वह स्थान जंगल ही क्यों न हो।

सड़क को गन्दा करने पर पाँच सौ से हजार डॉलर तक अर्थ दण्ड हो सकता है।

अमेरिका बहुत बड़ा देश है, यह भौगोलिक दृष्टि से भारत से तीन गुना बड़ा है और जनसंख्या में तीन गुना छोटा, अत: सब कुछ बहुत खुला–खुला लगता है।

देश का भूभाग बहुत बड़ा होने के कारण यहाँ समय को तीन भागों में बाँटा गया है। तीनों क्षेत्र में अलग–अलग समय होता है। गर्मी–सर्दी में हमारे यहाँ सुविधा के लिये समय बदलते हैं, जैसे ग्रीष्म काल में कार्य का प्रारम्भ साढ़े छ: बजे होता है तो शीत काल में सात बजे होगा, परन्तु अमेरिका में घड़ी बदली जाती है। काम तो उतने ही बजे होता है, परन्तु मार्च मास में घड़ी एक घण्टा आगे को जाती है तो नवम्बर मास में एक घण्टा पीछे को जाती है। देश की सारी घड़ियाँ ऐसे ही चलती हैं।

नगर केन्द्र भाग को डाउन टाउन कहा जाता है। यहाँ ऊँचे भवन, बाजार आदि होते हैं। डाउन टाउन क्यों कहते हैं, कोई नहीं बता पाया।

यहाँ केन्द्रीय सरकार के पास केवल तीन काम हैं– डाक व्यवस्था, सेना और मुद्रा। उसको यहाँ के लोग थ्री एम कहते हैं– मनी, मिलीट्री, मेल। शेष सब कुछ निजी व्यवस्था में हैं।

नियम–कानून की पालना कठोरता से की जाती है। जब यह कहा जाता है कि यह कानून है, फिर कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता, फिर तो पालन करना ही होगा।

निर्धारित गति सीमा से अधिक गाड़ी चलाने पर पुलिस पकड़ती है, तो उसे टिकिट देना कहते हैं। तीन बार टिकिट मिलने पर चालक का लाइसेन्स निरस्त कर दिया जाता है। गलत गाड़ी चलाते हुए पकड़े जाने पर बीमे की राशि अधिक भरनी पड़ती है।

आप कहीं से भी पैदल सड़क पार नहीं कर सकते, सड़क पार करने के लिये सड़क के किनारे खम्भे पर बटन लगा रहता है, उसे दबाने पर संकेत मिलता है, तभी सड़क पार कर सकते हैं।

सड़कें बहुत चौड़ी और अच्छी बनी हुई हैं। सड़कों पर पुलों की भरमार है। कहीं–कहीं तो एक ही सड़क पर आठ मार्ग आने के और आठ मार्ग जाने के होते हैं, दो–चार–छ: तो प्राय: हैं। लम्बे मार्गों पर एक कार एक सौ बीस किलोमीटर की गति से प्राय: चलती है। कार में प्राय: एक व्यक्ति यात्रा करता है। घर में हर सदस्य की कार अलग है। सरकार द्वारा एक से अधिक व्यक्ति यदि

एक कार में यात्रा करते हैं, तो सड़क पर चलने के लिये अलग से मार्ग दिया गया है।

इस देश में सार्वजनिक वाहन की व्यवस्था बहुत कम स्थानों पर है। यहाँ पर सभी लोग अपनी-अपनी कार से चलते हैं। कहा जाता है कि यहाँ की कार कम्पनियाँ सार्वजनिक वाहन व्यवस्था को बनने ही नहीं देतीं, जिससे कार पर चलना सबकी विवशता है। यहाँ सम्पन्नता बहुत है, बहुत लोग निजी वायुयान रखते हैं, उसी से यात्रा करते हैं।

इसी प्रकार यहाँ की शस्त्र निर्माण कम्पनियाँ भी हथियारों पर रोक नहीं लगाने देती। यहाँ शस्त्रास्त्र व्यवसाय बहुत बड़ा है और इनका सरकार पर बहुत प्रभाव है। शस्त्र के लिये अनुमति-पत्र की आवश्यकता नहीं है।

यह देश वैधानिक रूप से एक ईसाई देश है। जब भी कोई नगर या कॉलोनी बनाई जाती है, तो उसमें तीन-चार बड़े-बड़े प्रमुख स्थान चर्च के लिये छोड़े जाते हैं।

नगर, ग्राम सभी स्थानों पर अग्नि-शमन की सम्पूर्ण व्यवस्था है। अग्निशमन के समय जहाँ से जल लिया जायेगा, वह स्थान लाल रंग से चिह्नित किया गया होता है, वहाँ पर कोई वाहन नहीं खड़ा किया जा सकता, उस स्थान को सदा खाली रखना होता है। यहाँ लोगों में नियम पालन के अभ्यास में सज्जनता से अधिक दण्ड-भय का है, जिससे सब बचना चाहते हैं।

छोटे-से-छोटे स्थान पर अन्य सुविधाओं के साथ-साथ पुस्तकालय होता है। यह प्रतिदिन प्रात: ९ बजे से रात्रि ९ बजे तक खुला रहता है। पुस्तक को कभी भी जमा किया जा सकता है। यह काम कम्प्यूटर से होता है। पुस्तक निर्धारित मशीन में डाल दीजिये, आपके नाम पर जमा हो जायेगी। अलमारी में पुस्तक देखने के लिये ऊँचाई के लिये सीढ़ी तथा बैठकर देखने के लिये छोटी चौपाई सब स्थानों पर सुलभ है। बच्चों के लिये पृथक् कक्ष होता है। कम्प्यूटर पर काम करने की सुविधा है। पुस्तकालय का उपयोग करने के लिये केवल उस क्षेत्र का नागरिक होना आवश्यक है। कोई शुल्क नहीं लगता। लोग हर समय पुस्तकालय का उपयोग करते देखे जा सकते हैं।

अमेरिका में साबुन से कपड़े धोने की प्रथा नहीं है, अत: इस देश में स्नान के लिये साबुन मिल जाता है, परन्तु कपड़े धोने का साबुन नहीं मिलता।

कपड़े मशीन में धोये जाते हैं और कपड़े सुखाने का कार्य भी मशीन से किया जाता है। घर के बाहर कपड़े सुखाना असभ्यता समझी जाती है।

यहाँ सार्वजनिक स्थानों पर पीने के पानी के नल लगे होते हैं, परन्तु उनमें पानी ऊपर की ओर निकलता है। नल की धार में मुँह लगाकर लोग पानी पीते हैं। यहाँ पात्र या अंजलि का प्रयोग कोई नहीं करता।

यहाँ शौचालयों में पानी की व्यवस्था नहीं होती। इस देश में भोजनालय से शौचालय तक सफाई का काम कागज से ही किया जाता है। यहाँ रूमाल का प्रयोग करने की प्रथा नहीं है।

दूरभाष या बैट्री चार्ज करने के लिये उपकरण में पिन के स्थान पर पत्ती होती है। अमेरिका में उतरते ही मेरे सामने सबसे पहले यही समस्या आई। मेरे पास पिन वाला चार्जर था, यहाँ पत्ती वाला काम आता है।

यहाँ के निवासियों को बहुत सभ्य होने पर भी भोजन बनाना नहीं आता। इनका भोजन बर्गर, पिज्जा, नूडल, सिरियल्स आदि कुछ भी मिलाकर, कुछ भी बनाने जैसा है। किसी भी भोजन में मैदा और मांस ही मुख्य होता है। इनके भोजन में दाल, शाक जैसी कोई कल्पना नहीं है, इसीलिये इनके यहाँ सूप और सलाद की कल्पना की गई है। हमारे यहाँ दाल, शाक, चटनी जैसी चीजों के रहते सलाद सूप की कल्पना नकल से अधिक कुछ नहीं है। यहाँ के लोग दाल-शाक के अभाव में भोजन के साथ कॉफी या कोक का प्रयोग करते हैं।

यहाँ रहने वाले भारतीय प्राय: अपना भोजन रविवार को बना लेते हैं और एक सप्ताह तक गर्म करके खाते हैं।

एक ओर यहाँ शुद्धता का बहुत ध्यान रखा जाता है, परन्तु इनके भोजन में विटामिन, प्रोटीन, मिनरल के नाम पर खाने के पदार्थों में भयंकर मिलावट रहती है। यहाँ आकर कोई यह नहीं कह सकता कि वह शाकाहारी बचा है। यहाँ दूध में विटामिन आदि के नाम पर कुछ भी पशु उत्पाद मिलाते रहते हैं। दही जमाने के लिये बछड़े की आँतों से निकलने वाले रेनिन का उपयोग किया जाता है। दही को गाढ़ा जमाने के लिये जिलेटिन उसमें मिलाया जाता है। डबल रोटी में अण्डा मिलाना सामान्य बात है,

नान और रोटी के आटे में अण्डा मिला देते हैं। पनीर बनाने के लिये रेनिन का ही प्रयोग किया जाता है।

चॉकलेट, टॉफी, बिस्कुट में सब मांस के पदार्थ मिश्रित रहते हैं, अतः कोई भी मिठाई शाकाहार नहीं है।

यहाँ एक अच्छी बात है। भारत में रसोई के कचरे को लेकर बड़ी समस्या होती है। गीले कचरे को बाहर फेंका जाता है, परन्तु अमेरिका में गीला कचरा नल के नीचे डालकर बहा दिया जाता है, जिसे उसमें लगी मशीन चूरा करके पानी के साथ बहा देती है।

इस देश में शिक्षा निःशुल्क है। दसवीं तक शिक्षा के साथ भोजन की आवश्यकता हो तो सरकार उसकी भी व्यवस्था करती है। पूरे देश में शिक्षा व्यवस्था एक जैसी है, पूरे देश की भाषा एक ही है, इसलिये माध्यम में किसी प्रकार का संकट नहीं हैं। जो परिवार जिस क्षेत्र में रहता है, उसे अपने बच्चों को उसी क्षेत्र के विद्यालय में पढ़ाना अनिवार्य होता है। निजी विद्यालय बहुत कम और बहुत महँगे होते हैं।

छोटे बच्चों को कार की आगे की सीट पर बैठाना दण्डनीय होता है, उनके लिये पीछे की सीट पर अलग व्यवस्था करनी पड़ती है।

बारह वर्ष तक के बालक को अकेले घर पर छोड़ना दण्डनीय अपराध है।

दूरभाष पर बात करते हुए सम्बन्धित व्यक्ति न मिलने पर शब्द सन्देश देने की परम्परा है।

घर से निकलते समय व्यक्ति समय के साथ वातावरण कैसा रहेगा, यह भी देखता है।

यहाँ वर्षा, आँधी, हवा, धूप, गर्मी, शीत का अनुमान बहुत पहले लग जाता है। पर्यावरण विज्ञान कार्यालय की घोषणा सटीक होती है, लोग उसके अनुसार अपने कार्यक्रम बनाते हैं।

भारत में पुराने छत के पंखों में दो पत्तियाँ होती थीं, फिर प्रायः तीन पत्ती होती हैं। अब कहीं-कहीं चार पत्तियाँ भी देखी जा सकती है, परन्तु अमेरिका में पंखों में पाँच पत्तियाँ होती हैं।

केलिफोर्निया में पीने का पानी छः सौ मील की दूरी से पहाड़ों से आता है, जबकि प्रदेश समुद्र के किनारे है।

अमेरिका में आयकर बहुत अधिक है। प्रदेश और केन्द्र का आयकर मिलकर चालीस से पैंतालीस प्रतिशत है। सभी सेवा कार्य करने वाले लोग इससे पीड़ित रहते हैं।

अमेरिका में चिकित्सकों की प्रतिष्ठा बहुत है, उनकी आय भी अधिक है। चिकित्सक बीमा कम्पनियों से बँधे रहते हैं। स्वतन्त्र चिकित्सक बीमा के बिना देखता है तो बहुत पैसे लगते हैं। एक दाँत उखड़वाने में भारत जाकर आने और दाँत की चिकित्सा कराने जितना पैसा लगता है। सामान्य व्यक्ति के लिये आवास, भोजन, वाहन, भाषा की समस्या का संकट रहता है।

इस देश में सहायता के लिये एक अंक ७११ है, इससे भारतीय लोग बहुत भयभीत रहते हैं। किसी भी प्रकार की सहायता के लिये पुलिस को बुलाया जा सकता है। विद्यालय में बच्चों को सिखाया जाता है- जब कोई तुमसे दुर्व्यवहार करे तो तुम इस अंक पर सूचना दे सकते हो। बच्चों को डांटना, पीटना इस देश में अपराध है। ऐसा अनेक बार होता है। भारतीय माता-पिता बच्चों को डाँटते या मारते हैं, तो बच्चे पुलिस में शिकायत कर देते हैं। पुलिस पकड़कर ले जाती है, पीटने वाले को जेल में बन्द कर देती है।

शिकागो में श्री भूपेन्द्र शाह ने बताया कि यहाँ एक माता-पिता अपने पुत्र-पुत्रवधू के पास रहने के लिये भारत छोड़कर अमेरिका आ गये। सास ने किसी बात पर नाराज होकर पुत्रवधू को बहुत डांट दिया। बहू ने इस अंक पर शिकायत कर दी, पुलिस सास-श्वसुर को पकड़कर थाने ले गई। फिर अलग होटल में रखा और फिर भारत भेज दिया।

१६ वर्ष की आयु के बाद बच्चे स्वतन्त्र होते हैं। आप उन्हें घर जबरदस्ती नहीं रख सकते, वे घर छोड़कर कहीं भी जा सकते हैं।

इस देश में विद्यालय की शिक्षा निःशुल्क है, परन्तु कॉलेज विश्वविद्यालय की उच्च शिक्षा बहुत महँगी है। जो प्रतिभाशाली बच्चे हैं, उन्हें छात्रवृत्ति मिल जाती है, जो सम्पन्न है या पुरुषार्थी हैं, स्वयं कमाकर पढ़ते हैं। शेष लोग अपनी आजीविका में लग जाते हैं। यहाँ के संस्थानों में ईसाई लोगों को प्राथमिकता दी जाती है।

इस देश की विशेषता है कि आपके पास धन है तो

आपके पास सब कुछ है। आप जो सुविधा चाहो, प्राप्त कर सकते हो। यहाँ पर संवेदना, भावात्मकता का कोई स्थान नहीं। जिन बातों से मन में संवेदना जागती है, उनका यहाँ नितान्त अभाव है। डॉ. सुखदेव सोनी के शब्दों में यहाँ के लोगों के पास माता-पिता, गुरु, अतिथि को छोड़कर सब कुछ है। माता-पिता उत्पन्न कर देते है, परन्तु उनका कब और कितनी बार तलाक होगा, पता नहीं। ऐसे में बच्चों की संवेदना किससे जुड़ेगी? कक्षा में शिष्य अध्यापक के सामने टेबल पर पैर फैलाकर बैठता है तो अध्यापक उसे कुछ भी नहीं कह सकता, फिर आदर का भाव कहाँ से उत्पन्न होगा? अतिथि तो यहाँ कोई होता ही नहीं। सबके सब यहाँ अनुमति से आते-जाते हैं।

यहाँ निवास करने वाले भारतीयों का स्वभाव भिन्न है। किसी गोरे व्यक्ति से दृष्टि मिलती है, तो वह हँसकर 'कैसे हो' पूछता है, 'धन्यवाद' कहता है, परन्तु अधिकांश भारतीयों के चेहरे पर देखकर अप्रसन्नता का भाव प्रकट होता है, आँख मिलने पर चेहरा घुमा लेते हैं।

भारतीय लोग घर में भी अंग्रेजी का व्यवहार करने में गौरव समझते हैं। बच्चों से अंग्रेजी ही बोलते हैं। परिणामस्वरूप बच्चों को मातृभाषा या हिन्दी से परिचय नहीं हो पाता। कुछ परिवार घर में मातृभाषा का प्रयोग करते हैं।

इस देश में दूरी आज भी मील में नापी जाती है, तोल नाप के लिये पौण्ड, गेलन का ही प्रयोग होता है,गर्मी का माप फारनहाइट में ही होता है।

बस में परिचालक नहीं होता। एक पास राज्य या नगर में चलता है। एक यात्रा का नगर में एक ही टिकिट होता है।

सड़क पर कोई पैदल चलता हुआ दिखाई नहीं देता। सड़क पर कारें या बड़े लम्बे-लम्बे बन्द ट्रक चलते दीखते हैं।

सभी यान, सार्वजनिक स्थानों पर नियम से अशक्तों की पृथक् से व्यवस्था करनी होती है। इसमें किसी प्रकार की कमी दण्डनीय होती है।

कारों में पेट्रोल अपने-आप भरना होता है। कोई सहायक या दुकानदार नहीं होता। लेन-देन का सारा काम क्रेडिट कार्ड से होता है। नकद का व्यवहार बहुत कम होता है।

यहाँ सरकार पर पूँजीपतियों और बड़ी कम्पनियों का कब्जा है तो दवा बनाने वाले, डॉक्टर, बीमा कम्पनियाँ और वकील मिलकर जनता को लूटते हैं। एक डॉक्टर ने अपने व्यवसाय के बारे में टिप्पणी करते हुए कहा था- डॉक्टर क्या करता है,एक मनुष्य की सारे जीवन की कमाई का नब्बे प्रतिशत उसकी आयु के अन्तिम पाँच सालों में लूट लेता है।

बड़ा देश होने के कारण यहाँ की जलवायु सभी प्रदेशों में भिन्न-भिन्न है। आज धूप में चलने पर लॉस एन्जलस में दिल्ली की तरह गर्मी लगती है, वहीं सनीवेल में गर्मी-सर्दी दोनों नहीं है। यहाँ धूप प्रातः पाँच बजे से सायं सात बजे तक रहती है।

शिकागो में प्रातः उठा तब हिमपात हो रहा था। मध्याह्न में धूप निकल रही थी। सायंकाल के समय तेज हवायें चल रही थीं।

ह्यूस्टन पर समुद्र का प्रभाव बहुत रहता है। आज समुद्री तूफान में डूब रहा है, एक दिन उत्तर की हवायें चलती हैं, शीत बढ़ जाता है। दक्षिण की हवा चलती है, उष्णता बढ़ जाती है।

सड़क पर कोई किसी से आगे भागने का प्रयास नहीं करता। बड़े राज मार्ग पर तेज चलने के लिये अपनी पंक्ति बदलनी होती है।

सड़क पर कहीं भी अकस्मात् रुक नहीं सकते। रुकने के लिये स्थान बने होते हैं।

सड़क को कहीं से पार नहीं कर सकते। सड़क पार करने के लिये निशान बने हैं, गाड़ी वहीं से पार हो सकती है। गाड़ी के उपमार्ग से मुख्य मार्ग पर आने का स्थान निश्चित है, उसी प्रकार बाहर निकलने के लिये भी स्थान निश्चित है।

इस देश में सड़क पर यात्रा करते हुए बड़े खेतों में गायों के झुण्ड चरते हुए देख कर प्रसन्न मत होइये। गाय अमेरिका का सबसे दुर्भाग्यशाली पशु है। इसका सम्बन्ध इसका मांस खाने से है। यहाँ वालों का मुख्य भोजन गाय का मांस (बीफ) है। इसके बाद सूअर, घोड़े आदि आते हैं। यहाँ का भाग्यशाली जानवर कुत्ता है, इसकी बहुत सेवा होती है।

दूध मशीन से निकालते हैं, अतः बछड़ा पैदा होने पर मारकर गाय को चारे में मिलाकर खिला देते हैं। दूध में खून आने पर उसका मिल्क चॉकलेट बन जाता है।

इस देश में दैनिक घरेलू काम से लेकर सामाजिक समारोह तक के सारे काम सभी लोग मिल-बाँट कर ही कर लेते हैं। मजदूर से कार्य कराना, महँगा होने से सम्भव नहीं है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने, जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

छः वैदिक दर्शनों का मतैक्य है

- आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

महादार्शनिक महर्षि दयानन्द की यह स्थापना है कि प्रक्रिया का भेद होते हुए भी छः दर्शनों में परस्पर कोई भेद नहीं हैं। इनमें पूर्णतः समन्वय पाया जाता है। महर्षि की इस स्थापना का प्रचार तो आर्यसमाज करता रहा है, परन्तु इस दिशा में कार्य कुछ भी नहीं हुआ है। विपक्षियों ने जितना अधिक कार्य गत कई वर्षों में पूर्वपक्षीय सामग्री के प्रस्तुत करने में किया है, उसका न्यूनतम भाग भी अपनी तरफ से उत्तर देने में नहीं किया गया है। दो एक छोटी पुस्तकें षड्दर्शनों के समन्वय विषय को लेकर लिखी गईं, परन्तु उनके समन्वय की प्रक्रिया वा प्रकार ऋषि प्रदर्शित प्रकार से कुछ थोड़ा-सा भिन्न रहा, जबकि उनकी उपादेयता में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। दर्शनों के समन्वय का सफल प्रकार यदि कोई हो सकता है तो ऋषि प्रदर्शित प्रकार ही हो सकता है, अतः इस विषय में आगे चलने से पूर्व ऋषि के प्रकार को यहाँ पर दिखलाना सर्वथा ही उचित है, क्योंकि वही इस मार्ग पर अग्रसर होने का परम और मौलिक आधार है। महर्षि ने पूर्व पक्ष उठा कर समाधान करते हुए दो स्थलों पर सत्यार्थ प्रकाश में इस पर प्रकाश डाला है। प्रथम स्थल सत्यार्थ प्रकाश का तृतीय समुल्लास है और द्वितीय स्थल इसी ग्रन्थ का अष्टम समुल्लास है। प्रथम स्थल का वर्णन सृष्टि-रचना प्रकरण की प्रस्तावना पर आधारित है, परन्तु समन्वय का जो सूत्र ऋषि ने दिया है, वह दोनों स्थलों पर सृष्टि प्रकरण के तर्क को लेकर ही है। महर्षि के वाक्य क्रमशः निम्न प्रकार हैंः-

(१) प्रश्न-जैसे सत्यासत्य और दूसरे ग्रन्थों का परस्पर विरोध है, वैसे अन्य शास्त्रों में भी है। जैसा सृष्टि विषय में छः शास्त्रों का विरोध है-मीमांसा कर्म, वैशेषिक काल, न्याय परमाणु योग पुरुषार्थ, सांख्य प्रकृति और वेदान्त ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानता है-क्या यह विरोध नहीं?

उत्तर-प्रथम तो बिना सांख्य और वेदान्त के दूसरे शास्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति प्रसिद्ध नहीं लिखी और इनमें विरोध नहीं, क्योंकि तुमको विरोधाविरोध का ज्ञान नहीं। मैं तुमसे पूछता हूँ कि विरोध किस स्थान में होता है-क्या एक विषय में अथवा भिन्न-भिन्न विषयों में?

(२) प्रश्न-एक विषय में अनेकों का विरुद्ध कथन हो, उसको विरोध कहते हैं। यहाँ भी सृष्टि का ही विषय है।

उत्तर- क्या विद्या एक है या दो? एक है। जो एक है तो व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिष आदि का भिन्न-भिन्न विषय क्यों है, जैसा एक विद्या में अनेक विद्या के अवयवों का एक-दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है, वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न-भिन्न छः अवयवों का शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं हैं। जैसे घड़े के बनाने में कर्म, समय, मिट्टी, विचार, संयोग, वियोग आदि का पुरुषार्थ, प्रकृति के गुण और कुम्हार कारण है, वैसे ही सृष्टि का जो कर्म कारण है, उसकी व्याख्या मीमांसा में, समय की व्याख्या वैशेषिक में, उपादान कारण की व्याख्या न्याय में, पुरुषार्थ की व्याख्या योग में और तत्त्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या सांख्य में तथा निमित्त कारण जो परमेश्वर है, उसकी व्याख्या वेदान्त शास्त्र में है। इससे कुछ भी विरोध नहीं। जैसे वैद्यक शास्त्र में निदान, चिकित्सा, औषधिदान और पथ्य प्रकरण भिन्न-भिन्न कथित, परन्तु सबका सिद्धान्त रोग की निवृत्ति है, वैसे ही सृष्टि के छः कारण हैं। इनमें से एक-एक कारण की व्याख्या एक-एक शास्त्र ने की है, इसलिए इनमें कुछ विरोध नहीं। इसकी विशेष व्याख्या सृष्टि प्रकरण में करेंगे। (सत्यार्थ प्रकाश तीसरा समुल्लास।)

(३) प्रश्न- जो अविरोधी हैं तो मीमांसा में कर्म, वैशेषिक में काल, न्याय में परमाणु, योग में पुरुषार्थ, सांख्य में प्रकृति और वेदान्त में ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानी है। अब किसको सच्चा और किसको झूठा मानें?

उत्तर- इनमें सब सच्चे हैं, कोई झूठा नहीं, परन्तु विरोध उसको कहते हैं कि एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्धवाद होवे। छः शास्त्रों का अविरोध देखो, जो इस प्रकार है-मीमांसा में ऐसा कोई भी कार्य जगत् में नहीं होता कि जिसके बनाने में कर्म चेष्टा न की जाय, वैशेषिक में

समय लगे बिना बने ही नहीं, न्याय में उपादान कारण न होने से कुछ भी नहीं बन सकता, योग में विद्या, ज्ञान, विचार न किया जाय तो नहीं बन सकता, सांख्य में तत्त्वों का मेल न होने से नहीं बन सकता और वेदान्त में बनाने वाला न बनावे तो कोई पदार्थ उत्पन्न न हो सके, इसलिए सृष्टि छः कारणों से बनती है।

इन छः कारणों की व्याख्या एक-एक की एक-एक शास्त्र में है। (सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास)

यहाँ पर महर्षि के दोनों स्थलों का विचार करने पर यह निष्कर्ष निकलता है:-

१- एक कार्य में एक ही विषय पर विरुद्धवाद होने का नाम विरोध है, परन्तु दर्शनों में प्रक्रिया की भिन्नता होने पर भी ऐसा विरोध नहीं।

२- सृष्टि रचना का प्रसिद्ध वर्णन केवल सांख्य और वेदान्त में हैं, शेष चार में प्रसिद्ध वर्णन न होकर प्रासंगिक वर्णन हैं। समन्वय करते समय सृष्टि के विषय को लेकर ही समन्वय करना चाहिए, क्योंकि पूर्व पक्ष इसका स्पर्श करते हुए ही उठाया जाता है।

३- दर्शन के मुख्य विषय का तो इनमें विरोध है ही नहीं, सृष्टि की रचना के विषय में जो विरोध लोगों को दिखलाई पड़ता है, वह भी नहीं है।

४- छः दर्शन सृष्टि के छः कारणों की व्याख्या करते हैं और वे हैं-कर्म, काल उपादान, पुरुषार्थ, तत्त्वों का परस्पर मेल (संयोग) और ब्रह्म अर्थात् निमित्तकारणभूत कर्त्ता।

यहाँ पर इन्हीं आधारों को दृष्टिपथ में रखते हुए छः दर्शनों में परस्पर विरोध है वा नहीं-इसका विचार किया जाता है। छः दर्शनों में एक विषय पर होने वाला परस्पर विरोध नहीं पाया जाता है। जहाँ कहीं पर ऐसा आभास मिलता है, जिस-जिस पर पूर्वपक्षी अपना विचार स्थापित करते हैं, उनका विचार यहाँ पर करना अपेक्षित है। वैशेषिक में द्रव्यगुण का पृथक् वर्णन है। द्रव्य वह है जो क्रिया वाला, गुण वाला अथवा समवायिकारण हो। गुण द्रव्य के आश्रय से रहता है, परन्तु गुण में गुण नहीं रहता। द्रव्य-द्रव्य का आरम्भक है और गुण गुण का। केवल द्रव्य से गुण की उत्पत्ति नहीं और केवल गुण से द्रव्य की उत्पत्ति नहीं होती।

परन्तु सांख्य में सत्व, रजस् और तमस् को गुण कहा जाता है और इन तीनों की साम्यावस्था का नाम प्रकृति है। प्रकृति जब तीन गुणों की साम्यावस्था का नाम है तो फिर गुणरूप होने से उससे द्रव्य की उत्पत्ति नहीं होती है, परन्तु सांख्य में प्रकृति से उत्पन्न होने वाले पदार्थ द्रव्य भी हैं। यहाँ एक विषय में होने वाला विरोध नहीं तो फिर क्या है?

इसका समाधान यह है कि सांख्य में सत्व्, रजस् और तमस् जिन तीन गुणों का वर्णन है, वे केवल गुण नहीं, बल्कि वैशेषिक के लक्षण वाले गुण और द्रव्य दोनों हैं, अतः प्रकृति सत्वरजस्तमो गुणों की द्रव्यभूत वस्तु है। उसके द्रव्य तत्त्व से द्रव्य और गुण से गुण का आरम्भ होता है। गुण नाम रस्सी का है। पुरुष के बन्धन का हेतु बनने से उनमें गुण पद का व्यवहार होता है। वस्तुतः ये गुण और द्रव्य दोनों हैं। इस प्रकार वैशेषिक और सांख्य का भेद नहीं। सांख्य में इन सत्व, रजस्, तमस् के भी लघुत्वादि धर्म माने गये हैं जो यह सिद्ध करते हैं[१] कि ये गुणयुक्त द्रव्य हैं।

न्याय, वैशेषिक, वेदान्त और योग शास्त्र में परमेश्वर को जगत् का कर्त्ता एवं निमित्तकारण माना गया है, परन्तु सांख्य में उसके अस्तित्व में ही प्रमाण का अभाव माना गया है तथा उसका कारणत्व अस्वीकृत किया गया है। इसका समाधान यह है कि सांख्य सूत्रों में कहीं पर ईश्वर के होने का निषेध नहीं है। उसे केवल ऐन्द्रियक प्रत्यक्ष का विषय नहीं माना गया है। सांख्य में ईश्वर को सर्ववित् और सर्वकर्त्ता[२] स्वीकार किया गया है। प्रकृति को उसके अधीन परतन्त्र माना गया है और समाधि, सुषुप्ति तथा मोक्ष में ब्रह्मरूपता[३] को भी मन्तव्य रूप में दिखलाया गया है। सांख्य दर्शन के पाँचवें अध्याय में जहाँ[४] पर ईश्वर के कारणत्व का खंडन है, वहाँ पर केवल उसके उपादान कारणत्व का निषेध किया गया है, निमित्त कारणत्व का नहीं। कोई भी शास्त्र परमेश्वर को उपादान मानता ही नहीं, फिर विरोध का प्रश्न ही शेष नहीं रह सकता है।

सांख्य दर्शन में कुछ ऐसे सूत्र मिलते हैं, जिनसे यह आभास मिलता है कि न्याय और वैशेषिक का उनमें खण्डन किया गया है। उदाहरण के रूप में सांख्य दर्शन के पाँचवें

अध्याय के ८५ वें सूत्र से ९० वें सूत्रों तक को तथा ९९ सूत्र को लिया जा सकता है। इनमें क्रमशः पदार्थषट्कत्व, पदार्थषोडशकत्व, अणुनित्यता, परिमाण के चातुर्विध्य और समवाय आदि का खण्डन नहीं, खण्डनाभास मालूम पड़ता है। सांख्य में षट् पदार्थ और षोडशपदार्थ की प्रक्रिया एवं सिद्धान्त का खण्डन नहीं है, बल्कि षट्पदार्थ और षोडशपदार्थ के ही ज्ञान से मुक्ति हो सकती है-ऐसा ही नियम है, इस विचार का खण्डन है। वैशेषिक और न्याय में ऐसा एक मात्र नियम निर्धारित नहीं किया गया है कि मुक्ति षट् और षोडश पदार्थ के ज्ञान से ही हो सकती है अन्यथा नहीं हो सकती। षट् और षोडश पदार्थों के ज्ञान से मोक्ष हो सकता है और अन्य दर्शनों में बताये प्रकार से भी। न्याय में तो स्वयं ही पदार्थों के संख्यैकान्तवाद का खण्डन[५] है। अणु की नित्यता के खण्डन से परमाणुओं के नित्यत्व का प्रत्याख्यान भी सांख्यकर्त्ता को अभिप्रेत नहीं। सांख्यकार ने प्रधान की वृत्ति को भी अणुवत् माना हैं। यदि वह अणुओं का खंडन करता तो फिर दूसरे स्थान पर उन्हें स्वीकार क्यों करता[६]? सांख्यकार ने वस्तुतः परमाणुओं का खण्डन किया है। महर्षि व्यास के शब्दों में नित्यता दो प्रकार की होती है-परिणामी नित्यता और कूटस्थ नित्यता [७]। जो वस्तु उपादान कारण होगी (चाहे वह प्रकृति हो अथवा परमाणु हो) उसकी नित्यता परिणामी नित्यता होगी, कूटस्थ नित्यता नहीं। कूटस्थ नित्यता केवल आत्मा और परमात्मा की है। इसी प्रकार सूक्ष्मता के विषय में भी समझना चाहिए। उपादान कारणों की सूक्ष्मता के विषय में भी समझना चाहिए। उपादान कारणों की सूक्ष्मता अन्वयीसूक्ष्मता अर्थात् कार्य की अपेक्षा से सूक्ष्मता है। प्रकृति और परमाणु की सूक्ष्मता कार्य की वह पराकाष्ठा है, जिससे बढ़कर फिर वह सूक्ष्म नहीं हो सकता है। यह अवस्था प्रकृति[८] की है और परमाणुओं की है। यहाँ पर अन्तर[९] बाहर आदि शब्दों का प्रयोग नहीं हो सकता और जो विभाजन हैं, उसे ही न्याय और वैशेषिक में परमाणु कहा गया है। यह परमाणु की अन्तिम अवस्था प्रकृति में परिसमाप्त है। सांख्यकार ने भूत तन्मात्रारूपी अणुओं को अनित्य माना है, वैशेषिकोक्त पराकाष्ठा के अपकर्ष को प्राप्त परमाणुओं को नहीं। अनन्वयीय अर्थात् स्वाभाविकी सूक्ष्मता आत्मा और परमात्मा की है। अन्वयी सूक्ष्मता की पराकाष्ठा प्रकृति एवं परमाणु में है।

सांख्य अणु, महत् और विभु परिमाण से ही कार्य चल जावेगा, ऐसा स्वीकार करता है, अतः ह्रस्व और दीर्घ को इनके ही अन्तर्गत मान लेता है, वैशेषिक चारों का वर्णन करता है। यह वस्तुतः खण्डन नहीं है। सामान्य को सांख्यकर्त्ता ने (सा.-५/९१-९२) स्वीकार किया ही है। समवाय का भी सांख्य में खण्डन नहीं समझना चाहिए। सांख्य का यह सिद्धान्त है कि कार्य सत्ता कारण में सत्तारूप से विद्यमान रहती है। उत्पत्ति केवल कार्य के वर्तमानावस्था में आने एवं अभिव्यक्ति को कहा जाता है। कार्य का यह अभिव्यक्त रूप इसी रूप में कारण से समवाय सम्बन्ध (नित्य सम्बन्ध) तो हो सकता है, परन्तु कार्य के अभिव्यक्त प्रकार का जो देश और काल से परिछिन्न है, अपने कारण के साथ समवाय सम्बन्ध नहीं हो सकता। इसी समवाय का सांख्य में खण्डन है, वैशेषिकोक्त समवाय का नहीं, क्योंकि वैशेषिक में कहीं भी कार्य के वर्तमान रूप के साथ कारण का समवाय सम्बन्ध नहीं बतलाया है। सामान्य, विशेष और समवाय आदि अपेक्षा बुद्धि से परिज्ञात होते हैं, अतः अनपेक्षाबुद्धि के विषय भूत साम्यावस्थापन्न प्रकृति में इनका परिज्ञान नहीं होता है-इस बात को दर्शाने के लिए सांख्य ने समवाय का स्पष्टीकरण किया है।

न्याय और वैशेषिक इन्द्रियों को भूतजन्य मानते हैं, क्योंकि जिस भूत से जो इन्द्रिय उत्पन्न होती है, वह उसी के गुण से युक्त पदार्थ को देखती है। सांख्य अहंकार को इन्द्रियों का कारण मानता है। इससे परस्पर विरोध मालूम पड़ता है, परन्तु इसमें भी विरोध की स्थिति नहीं। इन्द्रियाँ ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय भेद से दस हैं। मन उभयात्मक है। मन का भी इन इन्द्रियों में ही सन्निवेश है। यह सांख्य का सिद्धान्त है। न्याय में विशेषतया पंच ज्ञानेन्द्रियों पर विचार किया गया है। मन को पृथक् माना गया है। इन्द्रियाँ अपने भूतों के गुणों को देखती हैं, अतः एक इन्द्रिय दूसरे के विषय में नहीं देखती है। इन दोनों सिद्धान्तों को विचारने पर पता चलता है कि इन्द्रियों में भौतिकता व अभौतिकता दोनों हैं। इन्द्रियभूतों में विद्यमान रूप आदि गुणों के ग्रहण की जो शक्ति रहती है, वह भौतिक धर्म है, परन्तु गुणों को

इनसे प्रत्यक्ष होने पर भी द्रव्य, संख्या, जाति और अभाव आदि का प्रत्यक्ष मन से होता है, जबकि ये अपने-अपने ही विषयों को जान सकती हैं और साथ ही मन कर्मेन्द्रिय का कार्य भी करता है। मन के सम्पर्क से होने वाला इन्द्रियों का कार्य भौतिक धर्म नहीं है। यह शक्ति धर्म है जो मन और अहंकार के सम्बन्ध से इनमें है। मन का उभयात्मकत्व और प्रत्येक ज्ञानेन्द्रिय के विषय के ग्रहण करने में उसकी क्षमता यह सिद्ध करती है कि उसमें आहंकारिक धर्म[१०] है, अन्यथा वह भी एक ही विषय के ज्ञान से बँधा रहता। सांख्य ने मन को इन्द्रियों में माना है। न्याय ने इन्द्रियों को भूतों से मानकर मन को पृथक् माना है, अत: सांख्य का दृष्टिकोण मन को इन्द्रिय मानकर उसके भौतिकता का खण्डन है। यदि सब को भौतिक माना जाता तो मन को भी भौतिक मानना पड़ता जो सम्भव नहीं। सांख्य ने अपने मत के स्पष्टीकरण के लिए यह दिखलाया है कि इन्द्रियाँ एकान्तत: भौतिक ही हों-यह सिद्धान्त नहीं हैं, वे आहंकारिक भी हैं, क्योंकि मन का भी उनमें सन्निवेश है। न्याय और वैशेषिक को इन्द्रियों का जो भौतिकत्व अभिप्रेत है, उसका सांख्य ने खण्डन नहीं किया है। उसने केवल अपनी प्रक्रिया का स्पष्टीकरण किया है।

इसी प्रकार वेदान्त शास्त्र में सांख्य और न्याय, वैशेषिक आदि का खंडन दिखलाई पड़ता है, वह केवल आभासमात्र का खंडन है, वास्तविक खण्डन नहीं। व्यास को इतना ही कहना अभिप्रेत है कि बिना निमित्त कारण परमेश्वर को स्वीकार किये जड़ प्रकृति एवं परमाणु जगत् को उत्पन्न नहीं कर सकते, क्योंकि उनमें ज्ञान और क्रिया का अभाव[११]है, परन्तु ये जगत् के कारण नहीं अथवा उपादान नहीं है, वा इनकी सत्ता नहीं है, यह वेदान्त-शास्त्रकर्त्ता को अभिप्रेत नहीं है। सांख्य न्याय आदि में कहीं पर भी बिना परमेश्वर की निमित्तता के प्रकृति अथवा परमाणु आदि से जगत् की रचना का वर्णन नहीं है, अत: वेदान्त में इन दर्शनों का खण्डन नहीं। केवल ब्रह्मरूपी निमित्त कारण की उपादेयता को सिद्ध करने का यह प्रयास[१२] है। वेदान्त २/१/१२ से[१३] योग और वैशेषिक आदि का खण्डन नहीं है। उससे अन्य आचार्यों के उन सिद्धान्तों का खण्डन है जो ब्रह्म को जगत् का कर्त्ता नहीं स्वीकार करते हैं।

सृष्टि रचना के प्रकरण को ही बहुधा दर्शनों के विरुद्ध बतलाया जाता है। आचार्य दयानन्द का कथन यह है कि सृष्टि का वर्णन मुख्यत: सांख्य और वेदान्त में ही पाया जाता है, शेष चार में तो प्रासंगिक वर्णन है। सांख्य में प्रकृति, पुरुष और परमेश्वर तीन तत्त्वों को अनादि मानकर सृष्टि की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। परमात्मा सर्ववित् और सर्वकर्त्ता है। प्रकृति उसके अधीन है। जीव भी अनेक हैं और नित्य हैं, परन्तु उनके भोग आदि की व्यवस्था परमात्मा के द्वारा होती है। परमात्मा की निमित्तता से प्रकृति में क्षोभ होकर उसकी साम्यावस्था भंग होती है। तत्पश्चात् उससे महत्तत्त्व, पुन: उससे अहंकार और अहंकार से एक तरफ पंचतन्मात्राएँ, दूसरी तरफ मन सहित एकादश इन्द्रियाँ उत्पन्न होती हैं। पंचतन्मात्राओं से पाँच महाभूत और उनसे पुन: शरीरादि कार्य पदार्थ और विविध सृष्टि पदार्थों की रचना होती[१४] है। वेदान्त दर्शन में भी ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि माना गया[१५] है। ब्रह्म की निमित्तता से प्रकृतिरूपी उपादान में क्षोभ होकर जगत् उत्पन्न होता है। वेदान्त का क्रम भी वही है जो सांख्य का क्रम है। सृष्टि की रचना का सांख्य का क्रम इतना प्रसिद्ध और वैज्ञानिक है कि वही सर्वत्र स्वीकार किया गया है, अत: इससे किसी प्रकार के मत-भेद का प्रश्न ही नहीं उठता है।

शेष भाग अगले अंक में.....

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीव को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

जो खोटे काम करने वाला पुरुष अनेक प्रकार से अपने बल को उन्नति देकर सबको दु:ख देना चाहे, उसको राजा सब प्रकार से दण्ड दे। तो भी वह अपनी अन्यन्त खोटाइयों को न छोड़े तो उसको मार डाले अथवा नगर से इसको दूर निकाल बन्द रखे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४४

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्त्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/-   पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/-   पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/-   पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

पुस्तक – समीक्षा

पुस्तक का नाम – साहित्यिक जीवन की यात्रा
लेखक – राजेन्द्र 'जिज्ञासु'
प्रकाशक – वेद प्रचारिणी सभा, चामधेड़ा, डा. वेरी, महेन्द्रगढ़, हरियाणा।
पृष्ठ – २४० **मूल्य** – २००/– रु. मात्र

जीवन–यात्रा तो सभी प्राणी कर रहे हैं, किन्तु यह जीवन की यात्रा मनुष्य अपने ढंग से करता है। मनुष्य से इतर प्राणियों की जीवन–यात्रा को परमेश्वर ने निर्धारित कर रखा है। वे प्राणी अपनी यात्रा में कुछ विशेष नवीनता या परिवर्तन नहीं ला सकते, किन्तु मनुष्य के साथ ऐसा नहीं है। मनुष्य अपनी यात्रा को विशेष भी बना सकता है, उसमें नवीनता, तीव्रता भी ला सकता है।

संसार में मनुष्य की जीवन यात्रा के अनेक रूप देखने को मिलते हैं कोई अपनी यात्रा को परोपकार करते हुए करता है तो कोई अपने स्थार्थ को सिद्ध करने में और परहानि में ही अपनी यात्रा करते हुए जीवन व्यर्थ कर देता है। कोई अपने में ही सन्तुष्ट रहकर अपने जीवन को काट रहा होता है, ऐसा व्यक्ति न तो अपनी उन्नति करता है और न ही समाज की उन्नति करता है। ऐसे व्यक्ति की यात्रा भी व्यर्थ ही हो जाती है।

जीवन–यात्रा तो उसकी सफल व संतोषजनक होती है जो अपने जीवन को ठीक रखते हुए समाज को बहुत कुछ देता रहता है। जीवन की यात्रा करते हुए कोई देश की रक्षा में सहयोग करता है, कोई वैज्ञानिक बनकर मनुष्यों के लिए विशेष साधनों को उपलब्ध करवा देता है, कोई चिकित्सक बनकर सेवा करता है, इसी प्रकार अन्य–अन्य कार्य करके व्यक्ति समाज की सेवा करता हुआ अपनी यात्रा को सफल बना रहा होता है। संसार के विभिन्न लोकोपकारक कार्य में एक कार्य ''साहित्य सृजन'' का भी है। जो व्यक्ति संसार को जितना उपयोगी साहित्य देता है, वह व्यक्ति उतना ही अपनी जीवन–यात्रा को परिष्कृत कर लेता है।

आर्य जगत् में साहित्य सृजन करने वाले, वह भी मौलिक साहित्य का सृजन करने वाले पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे योग्य विद्वान् अनेक हुए हैं। आज आर्य समाज को सबसे अधिक साहित्य को देने वाले साहित्य रचनाकार पं. गंगाप्रसाद उपाध्यायजी के मानस पुत्र आर्य समाज के इतिहास के रक्षक, ऋषि व आर्य समाज के प्रति जीवन समर्पित व्यक्ति, लेखनी व विचारों के धनी, आर्य समाज के पूर्वजों के प्रति कृतज्ञ भाव रखने वाले, जिनकी लेखनी आज भी ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के लिए समर्पित है, जिनकी तड़प–झड़प आर्यों को नई जानकारी व उत्साह देने वाली है–ऐसे साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु' हैं। मान्यवर जिज्ञासु जी ने पूरा जीवन साहित्य रचने में लगाया है। अपने इस साहित्यिक जीवन की जानकारी सभी पाठक पा सकें–इसके लिए एक नई पुस्तक लिख डाली, जिसका नाम ही ''साहित्यिक जीवन की यात्रा'' है। इस पुस्तक में मुख्य रूप से लेखक ने अपने साहित्यिक जीवन को दर्शाया है। पुस्तक को पढ़ने पर पाठक अनुभव करेंगे कि लेखक ने अपना जीवन कैसे लेखनी को समर्पित किया। बाल्यकाल से लिखना आरम्भ कर आज पर्यन्त लिख रहे हैं। पाठक पुस्तक पढ़कर लेखक पर गर्व करेंगे कि लेखक की लेखनी किसी प्रलोभन वा किसी के दबाव में आकर बिकी नहीं। लेखनी सत्य ही लिखती चली गई, विशुद्ध इतिहास की सुरक्षा करती चली गई।

आज वर्तमान में बिकाऊ लेखक बहुत मिल जाते हैं। ऐसे बिकाऊ लेखक साहित्य में सत्य का गला घोटने वाले होते हैं, और ऐसे बिकाऊ लेखकों ने गला घोंटा भी है, किन्तु मान्यवर राजेन्द्र जिज्ञासु जी प्रलोभन से परे होकर सत्य की रक्षा करते रहे हैं। पुस्तक से पाठक जिज्ञासु जी के इस जीवन का दर्शन करेंगे। इतिहास का प्रदूषण हुआ, योजना बद्ध रीति से किया गया उस प्रदूषण का कैसे भण्डाफोड़ लेखक ने किया और यथार्थ में क्या था, यह जानकारी इस जीवन–यात्रा पुस्तक में मिलेगी।

जब ऋषि दयानन्द को विष देने वाली बात को षड्यन्त्र पूर्वक झूठलाने की योजना बनी, तब लेखक ने अनेक प्रमाण पूर्वक लेख लिखे, विद्वानों के प्रमाण उन्हीं के लेखों से खोज–खोजकर सत्य को प्रतिपादित किया, जिससे इतिहास प्रदूषकों की बोलती बंद हुई, यह विस्तार पूर्वक पाठक इस पुस्तक से प्राप्त करेंगे। लेखक ने इस साहित्यिक यात्रा में कितना अपना धन, बल व अमूल्य समय लगाया है, साहित्य सृजन के लिए कहाँ–कहाँ गये, कितने कष्ट उठाते हुए भी ऋषि की धुन में उनको कष्ट माना ही नहीं–यह जानकारी पुस्तक देगी। मुझे लगता है कि मैं पुस्तक

परिचय कराते हुए अधिक विस्तार की ओर चला गया। अब यहाँ पुस्तक को क्यों पढ़ें-वे कुछ बिन्दु यहाँ दे रहा हूँ कि वे बिन्दु स्वयं लेखक ने लिखे हैं-

१. आर्य सामाजिक साहित्य के इतिहास में यह अपने विषय की पहली पुस्तक है। एक बार आरम्भ करने पर इसे समाप्त करके ही पाठक इसे छोड़ेगा। इसकी रोचकता की साक्षी पाठक का हृदय देगा।

२. सार्वजनिक जीवन के सत्तर वर्षों को लेखक ने अपने गुणी विद्वानों से बहुत कुछ सीखा है। ऐसे सब संन्यासी, महात्माओं, विद्वानों, साहित्यकारों, पत्रकारों, लेखकों, गवेषकों तथा अपने पाठकों को भी लेखक अपना निर्माता मानकर उनसे सीखने के छोटे-छोटे प्रेरक प्रसंगों की माला पिरोकर पाठकों को विनम्रता से भेंट कर रहा है। नई पीढ़ी इसके पारायण से बहुत कुछ सीख सकती है।

३. सम्भवत: किसी साहित्यकार ने प्रथम बार अपने इतने निर्माताओं के प्रति कृतज्ञता का प्रकाशन किया है।

४. इस समय आर्य जगत् में ऐसा दूसरा व्यक्ति कोई नहीं मिलेगा, जिसको बहुत छोटी आयु में बड़े-बड़े महापुरुषों, बलिदानियों, ज्ञानियों के चरणों में बैठकर कुछ सीखने व आशीर्वाद पाने का सौभाग्य प्राप्त रहा हो। पूर्व पश्चिम, उत्तर और दक्षिण के इतने विद्वानों के सम्पर्क में और कौन आया? इतने नाम और कौन गिना सकता है? उनके छोटे बड़े रोचक प्रसंग इस पुस्तक की विशेषता हैं।

५. नई-नई खोज करने, अलभ्य स्रोतों की खोज में मन में मौज आयी, झोला उठाकर यात्रा को लेखक चल पड़ा। किसी को चिट्ठी-पत्री का, मार्ग-व्यय का कभी कोई बिल नहीं दिया।

६. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने अपने देहत्याग से पूर्व जो पाँच-दस मिनट का उपदेश-आदेश दिया, लेखक उसे महाराज का अन्तिम दीक्षान्त भाषण घोषित करता है। स्वामी जी के इस संक्षिप्त दीक्षान्त भाषण का हृदयस्पर्शी वर्णन इस पुस्तक का अनूठा संदेश है।

७. कुछ करने व बनने की जिनमें चाह है, उत्साह है, वे उसे अवश्य पढ़े।

दस परिच्छेदों में विभक्त यह पुस्तक लेखक के साहित्यिक जीवन यात्रा का वर्णन करने में अपने अन्दर एक खजाना लिए हुए है। दसवें परिच्छेद में पाठक कुछ विशेष पत्रों को पढ़ेंगे, जिन पत्रों से पाठकों को नये रहस्यों का पता चलेगा। दृढ़ बन्धन, सुन्दर आवरण, कागज व छपाई से युक्त यह पुस्तक पाठकों का ज्ञान वर्धन करेगी। आर्य समाजें, गुरुकुल व आर्य भद्रपुरुष इस पुस्तक विशेष को प्राप्त कर लेखक के साहित्यिक जीवन का अवश्य परिचय प्राप्त करेंगे-इसी आशा के साथ-

- आचार्य सोमदेव, ऋषि उद्यान, अजमेर।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ मई २०१६ तक)

१. श्री किशोर काबरा, अजमेर २. श्री देवमुनि, अजमेर ३. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर ४. श्रीमती निशी गुप्ता, अम्बाला केन्ट, हरियाणा ५. रिषभ गुप्ता, अम्बाला केन्ट, हरियाणा ६. श्री प्रणवमुनि व श्रीमती कमलेश, जयपुर, राज. ७. श्रीमती वीणा त्यागी, नई दिल्ली ८. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ९. श्रीमती ममता व श्री अरविन्द अवस्थी, जोधपुर, राज. १०. श्रीमती उर्मिला व जयदेव अवस्थी, जोधपुर, राज. ११. परिधि तनेजा, नई दिल्ली १२. श्री गौरव व श्रीमती आरती कथुरिया, दिल्ली १३. श्रीमती कमला देवी १४. डॉ. धर्मपाल गोयल, गिदरवाहा, पंजाब १५. श्री मनोज कुण्डू हापुड़, उ.प्र. १६. श्रीमती सुमन, झज्जर, हरियाणा १७. श्री किशन सिंह राठी, झज्जर, हरियाणा १८. स्वामी सोमानन्द, अजमेर १९. स्व. श्री सुरेश कुमार अजमेर २०. श्री उमेश राव पात्रा, बलांगीर, उडीसा २१. मै. जेनिथ एन्टरप्राइजेज, नई दिल्ली २२. श्री रंजन हांडा, नई दिल्ली २३. सुश्री चहक गुप्ता, हैदराबाद २४. श्री अवनीश कपूर, नई दिल्ली २५. श्री समयक कपूर, दिल्ली २६. श्रीमती शान्ता वत्रा, अजमेर २७. श्री देवेन्द्र गर्ग, भढिण्डा, पंजाब २८. श्रीमती प्रेम गुप्ता, भढिण्डा, पंजाब २९. श्री आनन्द अग्रवाल, फरीदाबाद, हरियाणा ३०. श्री सुभाष नवाल, अजमेर ३१. श्री करण सिंह, मुजफ्फर नगर, उ.प्र. ३२. स्वास्तिकॉम चेरिटेबिल ट्रस्ट, अमरावती, महाराष्ट्र।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(०१ से १५ मई २०१६ तक)

१. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर २. श्रीमती दीपा कोरानी, अजमेर ३. श्री सतीश कुमार आर्य, नई दिल्ली ४. श्रीमती गीता देवी चौहान, अजमेर ५. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर ६. श्रीमती संतोष राठी, झज्जर, हरियाणा ७. श्रीमती कमला देवी ८. श्री पुरुषोत्तमदास बूम्ब, अजमेर ९. श्री ओमपाल आर्य, अलीगढ़, उ.प्र. १०. रेखा गुप्ता ११. आर्य अशोक कुमार, रेवाड़ी, हरियाणा १२. स्व. श्री सुरेश कुमार, अजमेर १३. श्रीमती पुष्पा देवी झँवर, भीलवाड़ा, राज. १४. श्रीमती लक्ष्मी नारायण मालू, अजमेर १५. श्री बज्रमोहन सोनी, अजमेर १६. श्री भैरुसिंह कच्छावा, अजमेर १७. महिला मंडल, भीलवाड़ा, राज. १८. श्री अनुज मिश्रा, अजमेर १९. कै. चन्द्रप्रकाश त्यागी व कमलेश त्यागी, हरिद्वार, उत्तराखण्ड २०. श्री धर्मपाल आर्य, पंचकुला, हरियाणा २१. श्री रामचन्द्र गोयल, अजमेर २२. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर २३. श्री कैलाश शर्मा, अजमेर २४. श्री कृष्ण सिंह राठी, झज्जर, हरियाणा २५. श्रीमती सावित्री देवी मंत्री २६. श्रीमती जमना बाई, अजमेर २७. श्रीमती नवरात्री देवी, अजमेर २८. श्री रामवीर चुघ, पंचकुला, हरियाणा २९. वेदान्त शर्मा, अजमेर।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. ३० मई से ५ जून, २०१६ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४६००१६५९०

२. १२ से १९ जून, २०१६- **योग-साधना शिविर,** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

वानप्रस्थ आश्रम के दानदाता

१. श्री राममूर्ति, फरीदाबाद २. श्री जयपाल सिंह, गाजियाबाद, उ.प्र. ३. श्री जगदीशचन्द्र यादव, अजमेर ४. श्री नरेन्द्रनाथ मिश्रा, अजमेर ५. श्री दिनेशचन्द मालू/श्रीमती सरोज मालू किशनगढ़, राज. ६. आर्य समाज कुचेरा, नागौर, राज. ७. आर्य समाज नागौर, राज. ८. श्री नारायण सोनी, बीकानरे, राज. ९. डॉ. राधेश्याम आर्य, बीकानेर, राज. १०. श्री सुभाष शास्त्री, बीकानेर, राज. ११. श्री अमित आर्य, बीकानेर, राज. १२. श्री रामगोपाल आर्य, बीकानेर, राज. १३. श्री रविकान्त आर्य, बीकानेर, राज. १४. आर्यसमाज, बीकानेर, राज. १५. श्री सूरजप्रकाश यादव, बीकानेर, राज. १६. श्री रामसिंह यादव, बीकानेर, राज. १७. श्री रविन्द्र कुलश्रेष्ठ, बीकानेर, राज. १८. श्री इन्दरजीत कथुरिया, बीकानेर, राज. १९ श्री राजीव सिंह यादव, बीकानेर, राज. २०. श्री वेद कान्हाराम, श्रीगंगानगर, राज. २१. श्री सोहनलाल सिंगाठिया, श्रीगंगानगर, राज. २२. श्री लालचन्द यादव, श्री गंगानगर,राज. २३. श्री प्रहलाद यादव, श्री गंगानगर, राज. २४. श्री रविप्रकाश प्रधान, श्री गंगानगर, राज. २५. श्री बालकिशन कागजी, श्रीगंगानगर, राज. २६. मै. जैन कॉमर्शियल कोरपोरेशन, श्री गंगानगर, राज. २७. मै. धन्नाराम जयदेव, श्री गंगानगर, राज. २८. श्री सुशील सहगल, श्री गंगानगर, राज. २९. श्री रामनिवास, श्री गंगानगर, राज. ३०. श्रीमती राजेश्वरी श्री व श्री ब्रजलाल भाकर, श्री गंगानगर, राज. ३१. श्री रामलाल थानेदार, श्रीगंगानगर, राज. ३२. श्री दिवाकर गर्ग, हनुमानगढ, राज. ३३. श्री अजय गर्ग, हनुमानगढ, राज. ३४. श्री लाभ चन्द आर्य, हनुमानगढ, राज. ३५. श्री आनन्दमोहन, हजुमानगढ, राज. ३६. श्री रविन्द्रपाल आर्य, हनुमानगढ़, राज. ३७. श्री मन्साराम महेन्द्र आर्य, भ्रमसर ३८. आर्यसमाज, सरदारशहर, राज. ३९. श्री भँवरलाल सैनी, चूरु, राज. ४०. श्री श्यामसुन्दर तँवर, चुरु, राज. ४१. श्री ओमदास स्वामी, चुरु, राज. ४२. श्री रामचन्द्र, चुरु, राज. ४३. आर्यसमाज कुचामन, नागौर, राज. ४४. श्री मुन्नालाल व श्रीमती सुशीला भूतड़ा, अलवर, राज. ४५. श्री शिवलाल, किशनगढ़, राज. ४६. श्री रामावतार नागर, किशनगढ़, राज. ४७. श्रीमती रतन कँवर लाखोटिया, अजमेर ४८. श्रीमती चम्पा देवी, अजमेर ४९. श्री सुरेश मालू, अजमेर ५०. श्री भूपेन्द्र मालेवार, अजमेर ५१. श्रीमती रतन देवी, अजमेर ५२. श्री ओमप्रकाश बाहेती, अजमेर ५३. श्री पन्नालाल गैना, जेठाना ५४. श्री नारायण आर्य, जेठाना ५५. श्री श्याम सिंह, अजमेर ५६. श्री रमेशचन्द मूंदडा, अजमेर ५७. श्री शिवरतन पलोद, पीसागंन, राज. ५८. श्री रामलाल जानवा, अजमेर ५९. श्री जयकिशन ईनाणी, अजमेर ६०. श्री रामस्वरूप उन्नावी, अजमेर ६१. श्री मानकचन्द माहेश्वरी, अजमेर ६२. श्री हरिनिवास मूलचन्द इनाणी, अजमेर ६३. आर्यसमाज, कडैल, अजमेर ६४. श्री हरिप्रकाश सोनी, कडैल, अजमेर ६५. श्री ओम प्रकाश इनाणी, अजमेर ६६. श्री कृष्णचन्द छापरवाल, अजमेर ६७. श्री गोविन्द कुमार शर्मा, अजमेर ६८. श्री कैलाशचन्द मन्धाना, अजमेर ६९. श्री सुरेश माहेश्वरी, अजमेर ७०. श्री हरस्वरूप काबरा, अजमेर ७१. मै. ड्रीम मार्बल्स, अजमेर ७२. श्री अंकित गोयल, हनुमानगढ़, राज.।

ज्योतिष - परिचय शिविर

आर्यजगत् के प्रसिद्ध ज्योतिष-विद्वान्, श्री मोहन कृति आर्ष पत्रक (पंचांग) के निर्देशक-रचयिता श्री दार्शनेय लोकेश जी, नोयडा ने ऋषि उद्यान, अजमेर में शुद्ध ज्योतिष-परिचय का प्रशिक्षण देने के लिए चार दिन का समय प्रदान किया है। वे २५ से २८ जून २०१६ तक प्रशिक्षण प्रदान करेंगे व ज्योतिष सम्बन्धी शंकाओं-समस्याओं का भी समाधान करेंगे। इसमें डेढ़-डेढ़ घण्टे की दो कक्षाएँ प्रातः ९.३० से ११ व दोपहर २ से ३.३० तक होगी। प्रातः-सायं यज्ञ-प्रवचन यथावत् चलते रहेंगे।

इस शिविर में भाग लेने के इच्छुक प्रबुद्ध आर्यजन व ज्योतिष में रुचि रखने वाले महानुभव सम्पर्क कर सकते हैं। सूचना व स्वीकृति प्राप्त सज्जन ही इसमें भाग ले सकेंगे। संख्या सीमित रखी गई है।

सम्पर्क- आचार्य सत्यजित्, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.) दूरभाष- ०९४१४००६९६१ (रात्रि- ८.३० से ९.३०)

जिज्ञासा समाधान - ११२

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा- मान्यवर,

कृपया महाभारत में वर्णित नीचे लिखी शंकाओं का समाधान परोपकारी द्वारा प्रदान करवायें-

१. द्रौपदी किस पाण्डव की पत्नी थी और उसके पाँच पुत्र किसी एक के थे या उसके अतिरिक्त?

२. महाभारत के अतिरिक्त और ग्रन्थों में वर्णित, यह मणि क्या वस्तु है और इसकी क्या चमत्कार थे विस्तार से बताने का कष्ट करें।

३. पं. चमूपति जी द्वारा रचित ''योगेश्वर कृष्ण पुस्तक'' के पृष्ठ १७० पर लिखा है कि कृष्ण जी के पास एक अरब सेना थी यह बिल्कुल असम्भव लगता है, क्योंकि एक अरब सेना तो सारे भारत में जोड़ कर खड़ी करें तो भी नहीं आ सकती।

४. महाभारत में लिखा है कि लाखों गौओं के सींग और खुर सोने से जड़े थे। लाखों हाथी और घोड़ों की काठियाँ (बैठने के गद्दे), झूमर, पैर सोने में मढ़े थे। क्या उस समय लाखों टन सोना था भारत में?

५. हम रोजाना यह सुनते हैं लोगों से कि हर कार्य परमात्मा की इच्छा से होता है। उसकी मर्जी के बगैर पत्ता तक नहीं हिलता और हर एक प्राणी की आयु निश्चित है। क्या यह तथ्य सही है?

६. कहते हैं कि महाभारत युद्ध में १८ अक्षौणी सेना नष्ट हुई थी जिसमें लगभग ४८ लाख मनुष्य लाखों घोड़े, हाथी और हजारों रथ नष्ट हुये। अगर ऐसा है तो इन सबको डिस्पोजल कैसे किया गया या इनका निपटारा कैसे किया गया।

समाधान- (क) भारतीय इतिहास को विदेशी वा अपने ही स्वार्थी देशी लोगों ने बहुत कुछ बिगाड़ा है। वर्तमान की संतति अपने इतिहास से प्रेरणा लिया करती है, अपने इतिहास पुरुषों को अपना आदर्श माना करती है। उनके आदर्शों को अपने जीवन में धारण कर उन इतिहास पुरुषों की भाँति अपने जीवन को सफल बना लेती है। किसी भी देश का इतिहास उस देश की अमूल्य धरोहर के रूप में उस देश की संस्कृति होती है। हमारे देश का इतिहास सम्पूर्ण विश्व में सर्वाधिक गौरवशाली रहा है। हमारे इस गौरव को सहन न करने के कारण विदेशी लोगों ने विशेषकर अंग्रेजों ने हम भारतीयों को नीचा दिखाने के लिए और अपनी प्रभुसत्ता बनाए रखने के लिए हमारे इतिहास को विकृत कर दिया। इसी विकृत इतिहास का पोषण अंग्रेजों से प्रभावित जवाहरलाल नेहरू जैसे लोगों ने किया, जो कि हमारी वर्तमान पीढ़ी के लिए घृणा व हास्य का विषय बन गया।

इतिहास प्रदूषण का कार्य केवल अंग्रेज वा अंग्रेज भक्तों ने ही नहीं किया, अपितु स्वार्थी विषय लोलुप, धनलोलुप तथा-कथित विप्रवर्ग ने भी किया। आज हम किसी भी प्राचीन शास्त्र को उठाकर देखते हैं तो कहीं न कहीं उन शास्त्रों में वेदविरुद्ध बातों का प्रक्षेप मिल ही जाता है। आज 'मनुस्मृति' जैसे मानव संविधान के ऊपर एक वर्ग विशेष अपना रोष प्रकट क्यों कर रहा है, क्योंकि इस ग्रन्थ में स्वार्थी पोपों ने मिलावट कर रखी है। उस मिलावट के कारण वह वर्ग विशेष मनु को अपना विरोधी मानता है। यथार्थता तो यह है कि यदि यह वर्ग विशेष पक्षपात रहित होकर इस ग्रन्थ को पढ़े तो उनको यह ग्रन्थ व्यक्तिगत व सामाजिक व्यवस्था और उन्नति का सर्वोत्तम ग्रन्थ दिखेगा।

सबसे अधिक प्रदूषण (मिलावट) महाभारत में हुआ लगता है। उस विषय में महर्षि दयानन्द ने लिखा-''यह बात राजा भोज के बनाये संजीवनी नामक इतिहास में लिखी है.......... उसमें स्पष्ट लिखा है कि व्यासजी ने चार सहस्र चार सौ, और उनके शिष्यों ने पाँच सहस्र छः सौ श्लोकयुक्त अर्थात् मात्र दस सहस्र श्लोकों के प्रमाण का 'भारत' बनाया था। वह महाराजा विक्रमादित्य के समय में बीस सहस्र, महाराजा भोज कहते हैं कि मेरे पिताजी के समय में पच्चीस और अब मेरी आधी उमर में तीस सहस्र श्लोकयुक्त 'महाभारत' की पुस्तक मिलती है। जो ऐसे ही बढ़ता चला गया तो 'महाभारत' की पुस्तक

एक ऊँट का बोझा हो जायेगा।'' सं. प्र. ११

वर्तमान में महाभारत लगभग एक लाख श्लोक युक्त मिलता है अर्थात् लगभग नव्वे हजार श्लोकों की मिलावट। इतनी मिलावट होने पर वास्तविक तथ्यों को निकालना कठिन हो जाता है। आपने जो द्रौपदी के विषय में पूछा है हम यहाँ महाभारत के ही साक्ष्य देते हुए लिख रहे हैं कि द्रौपदी पाँच पतियों वाली नहीं थी, द्रौपदी एक पति की पत्नी थी। महाभारत के आदि पर्व के ३२ वें अध्याय में लिखा है-

तमब्रवीत् ततो राजा धर्मात्मा च युधिष्ठिर।
ममापि दारसम्बन्धः कार्यस्तावद् विशाम्पते।।

- १.३२.४९

तब धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर ने उनसे कहा- राजन्! विवाह तो मेरा भी करना होगा।

भवान् वा विधिवत् पाणिं गृहणातु दुहितुर्मम।
यस्य वा मन्यसे वार तस्य कृष्णामुपादिश।।

- १.३२.५०

अर्थात् द्रुपद बोले- हे वीर! तब आप ही विधि पूर्वक मेरी पुत्री का पाणिग्रहण करें अथवा आप अपने भाइयों में से जिसके साथ चाहे, उसी के साथ कृष्णा को विवाह की आज्ञा दे दें।

ततः समाधाय स वेदपारगो जुहाव मन्त्रैर्ज्वलितं हुताशनम्।
युधिष्ठिरं चाप्युषनीय मन्त्रविद्नियोजयामास सहैव कृष्णया।।

- १.३२.५१

वैशम्पायनजी कहते हैं- द्रुपद के ऐसा कहने पर वेद के पारंगत विद्वान् मन्त्रज्ञ पुरोहित धौम्य ने वेदी पर प्रज्वलित अग्नि की स्थापना करके उसमें मन्त्रों द्वारा आहुति दी और युधिष्ठिर को बुलाकर कृष्णा के साथ उनका गठबन्धन कर दिया।

प्रदक्षिणं तौ प्रगृहीतपाणिकौ समातयामास स वेदपारगः।
ततोऽभ्यनुज्ञाय तमाजिशोभिनं पुरोहितो राजगृहाद् विनिर्ययौ।।

- १.३२.५२

वेदों के पारंगत विद्वान् पुरोहित ने उन दोनों का पाणिग्रहण कराकर उनसे अग्नि की प्रदक्षिणा करवाई, फिर (अन्य शास्त्रोक्त विधियों का अनुष्ठान कराके) उनका विवाह कार्य सम्पन्न कर दिया। तत्पश्चात् संग्राम में शोभा पाने वाले युधिष्ठिर को अवकाश देकर पुरोहित जी भी उस राजभवन से बाहर चले गये।

महाभारत के इस पूरे प्रकरण से ज्ञात हो रहा है कि द्रौपदी का पाणिग्रहण अर्थात् विवाह संस्कार केवल युधिष्ठिर के साथ हुआ था। अर्थात् द्रौपदी का पति युधिष्ठिर ही थे न कि पाँचों पाँडव।

स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने आदि पर्व के इक्कतीसवें अध्याय के श्लोक ३४-३५ के अर्थ करने पर टिप्पणी की है- ''जो लोग द्रौपदी के पाँच पति मानते हैं वे इस स्थल को ध्यानपूर्वक पढ़ें। यहाँ माता चिन्तित हो रही है कि मेरे पुत्र अभी तक क्यों नहीं लौटे? उन्हें पहचान तो नहीं लिया गया है?''

इसके अतिरिक्त एकचक्रा नगरी में ब्राह्मण से द्रौपदी के स्वयंवर की बात सुनकर जब पाँचों पाण्डव उद्विग्न से हो गये थे, तब माता ने स्वयं ही वहाँ जाने का प्रस्ताव रखा था। मार्ग में व्यास जी ने भी पांचाल नगर में जाने की सम्मति दी थी। स्वयं माता को यह पता है कि मेरे पुत्र स्वयंवर में गये हैं। स्वयंवर की शर्त पूर्ण होते ही युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव माता को सूचना देने के लिए तुरन्त घर आ गये हैं। (यह बात महा. १.३०.३६ में स्पष्ट कही गई है) भीम और अर्जुन द्रौपदी को लेकर अनेक ब्राह्मणों के साथ घर पर आये हैं। इन सब प्रसङ्गों के ध्यानपूर्वक अवलोकन से यह स्पष्ट है कि न तो पाण्डवों ने यह कहा था कि हम भिक्षा लाये हैं और न कुन्ती ने यहा कहा कि पाँचों बाँट लो। द्रौपदी को पाँचों की पत्नी बनाने वाला सारा प्रकरण महाभारत में पीछे से मिलाया गया है । द्रौपदी पाँचों पाण्डवों की पत्नी नहीं थी। यद्यपि स्वयंवर की शर्त अर्जुन ने पूर्ण की थी, परन्तु द्रौपदी का विवाह युधिष्ठिर के साथ हुआ था। वह युधिष्ठिर और केवल युधिष्ठिर की पत्नी थी।''

इस सब मिलावट से प्रतीत हो रहा है कि जो कौम अपने महापुरुषों को लांछित करने में लगी हो, वह कैसे बच पायेगी? श्री कृष्ण, महादेव, विष्णु आदि के चरित्र को कितना गिरा हुआ पुराण आदि ग्रन्थों में दिखाया गया है। ये सब महापुरुष उत्तम चरित्र वाले थे, किन्तु इन उत्तम चरित्र वाले महान् पुरुषों को भी बदनाम करने में कल्पित कथाकारों

ने कमी नहीं छोड़ी। ऐसे माता द्रौपदी को भी पाँच पतियों वाली कहकर बदनाम ही किया है।

यह इतना सारा लिखने का प्रयोजन यही है कि हम अपने शास्त्रों, इतिहास ग्रन्थों से मिलावट को दूर कर दें और अपने महापुरुषों पर लगाये हुए लांछनों को हटा दें तो कोई भी विधर्मी अपनी धर्म पर गर्वोक्ति नहीं कर सकता है और न ही इस हिन्दू कौम को नीचा दिखा सकता।

आपने जो द्रौपदी के पाँच पुत्रों के विषय में पूछा है कि वे किसके थे? इसका स्पष्ट वर्णन तो हमें महाभारत में प्राप्त नहीं हुआ मिलावट युक्त में तो अवश्य पाँचों पुत्रों को एक-एक पाण्डव का कहा है, किन्तु युक्ति से तो यही स्पष्ट हो रहा है वे पुत्र युधिष्ठिर के ही होंगे, क्योंकि द्रौपदी युधिष्ठिर की ही पत्नी थी।

(ख) महाभारत के अतिरिक्त मणि की चर्चा पढ़ने में नहीं आयी। हाँ, स्फटिक मणि की चर्चा दर्शन शास्त्र में आयी है, किन्तु यह कोई चमत्कारी मणि नहीं है और न ही कोई इस प्रकार की मणि होती है। मणि का अर्थ बहुमूल्य कांतियुक्त पत्थर, रत्न, जवाहिर आदि ही है। जैसे पारस पत्थर की कथा गढ़ रखी है कि पारस पत्थर लोहे को सोना बना देता है जो कि यह बात सर्वथा झूठ है। महर्षि दयानन्द इस विषय में कहते हैं- ''पारसमणि पत्थर सुना जाता है यह बात तो झूठी है.....।'' सं. प्र. ११ इसी प्रकार यह मणि वाली कथाएँ गढ़ी हुई हैं।

''योगेश्वर कृष्ण पुस्तक'' में जो एक अरब सेना वाली बात वह असम्भव ही है, क्योंकि यहाँ की जनसंख्या भी कुल इतनी नहीं थी। यह बात कहीं के पुराण से ली गई लगती है। पं. चमूपति जी का इस पुस्तक को लिखने का मुख्य प्रयोजन अवतारवाद का खण्डन करना था। श्री कृष्ण ईश्वर के अवतार नहीं थे, अपितु वे एक योगी पुरुष, नीतिज्ञ, अत्यन्त प्रतिभा सम्पन्न महापुरुष थे यह सिद्ध करना पं. चमूपति का उद्देश्य था।

(घ) वर्तमान की अपेक्षा हमारा भारतवर्ष अधिक ऐश्वर्य सम्पन्न था-विश्व में सबसे अधिक सम्पन्न। प्राचीन काल में तो था ही मध्यकाल को भी देखें तो यहाँ धन धान्य की कोई कमी न थी। सोमनाथ के मन्दिर का इतिहास देखिये! इस मन्दिर के पास अपार धन था। सोना, चाँदी, हीरे, मोती, सोने की ठोस मूर्तियाँ चाँदी की मूर्तियाँ, बर्तन आदि यह तो एक मन्दिर की सम्पदा है, ऐसे-ऐसे हजारों मन्दिर इस देश में थे, जिनके पास ऐश्वर्य की कमी नहीं थी। ऐसा लगता है कि राजाओं के पास धन कम था और मन्दिरों के पास अधिक। आज वर्तमान में भी मन्दिरों के पास कितना धन है- इसका अनुमान आप लगा सकते हैं। तिरुपति बालाजी मन्दिर की वार्षिक आय लगभग दो हजार छः सौ अस्सी करोड़ है। इस मन्दिर के पास सोना कितना इसका पता ही नहीं। अन्य-अन्य मन्दिरों के पास भी ऐसा ही धन सोना आदि हैं। जब इस समय हमारे मन्दिरों आदि के पास इतना धन है तो पहले यह भारत देश इससे कई गुणा सम्पन्न था, इसलिए गौ आदि के सींगों पर सोना चढ़ा देते थे। उपनिषद् में भी सोने से मढ़ी सींगों वाली हजारों गौवों का वर्णन आता है।

ऐसा तो नहीं लगता कि उस समय की प्रत्येक गाय आदि को सोने से सजाया जाता हो। हाँ, इतना अवश्य प्रतीत होता है कि राजा लोग अपने पशुओं को सोने-चाँदी आदि से अलंकृत करते थे। जब कभी कुछ चीज ज्यादा दिखती हैं तो उसको बढ़ा-चढ़ाकर बोला जाता है। यह भाषा का प्रयोग है, इसको अर्थवाद कहते हैं। जैसे हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर आये तो पुरा गट्ठड़ ही बाँधकर ले आये थे, इस पूरे गट्ठड़ को देखकर उनको कह डाला कि पूरा पहाड़ का पहाड़ उठा लाये। बहुलता को देखकर पहाड़ कह दिया था। इस पहाड़ वाले भाषा प्रयोग को न समझने वालों ने वास्तविक पहाड़ ही समझ लिया। ऐसे ही यहाँ समझे कि बहुलता को देखकर ऐसा वर्णन किया गया है।

यह तो निश्चित है कि उस समय इन चीजों का अधिक प्रचलन था, जब आज एक पत्थर की मूर्ति बना सांई बाबा करोड़ों रु. के सोने के सिहांसन पर बैठा है तो उस समय चेतन प्राणियों को इस प्रकार के आभूषणों से क्यों नहीं अलंकृत करते होंगे।

(ङ) कुछ बातें अन्धश्रद्धा एवं अतिरेक में ऐसे बोल दी जाती हैं, जिन बातों को साधारण लोग सुनते हैं तो उनको अच्छा और ठीक लगता है। ये अच्छी और ठीक लगने वाली बातें सिद्धान्ततः गलत होती हैं। ऐसी ही यह

बात है कि ''परमात्मा की इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिलता।'' यह कहना नितान्त वेद विरुद्ध है। यदि ऐसा ही मानने लग जायें तो कर्मफल सिद्धान्त खण्डित होगा, क्योंकि जो कुछ संसार में कर्म होगा, वह परमात्मा की इच्छा से होगा और जिसकी इच्छा से कर्म हो रहा है तो फल भी उसी को मिलना चाहिए, अर्थात् जीव को अच्छे-बुरे का फल न मिलकर परमात्मा को मिलना चाहिए, किन्तु ऐसा होता नहीं है।

इसलिए जो कर्म जीवात्मा करता है, वह अपनी इच्छा से करता है, न कि सर्वथा परमात्मा की इच्छा से, इसलिए कर्मों का फल भी कर्म करने वाला जीवात्मा ही भोगता है। यदि ऐसा सिद्धान्त मान कर चलने लग जायें तो संसार में जो एक दूसरे के प्रति अन्याय करते हैं, जैसे किसी ने चोरी की, हत्या की, अपमान किया आदि करने पर ऐसा करने वाले को दण्ड भी नहीं मिलना चाहिए, क्योंकि यह कर्म उसने अपनी इच्छा से न करके ईश्वर की इच्छा से किया है, इसलिए यह व्यक्ति दण्ड का भागी नहीं होना चाहिए। किन्तु ऐसा नहीं होता अर्थात् अपराधी को दण्ड दिया जाता है, इसलिए यह कहना कि ''सब काम परमात्मा की इच्छा से होते हैं'' गलत है।

(च) महाभारत युद्ध में जो भी मनुष्य वा हाथी घोड़े मरे थे, उन सबका विधिवत् अन्तिम संस्कार किया गया- ऐसा 'स्त्रीपर्व' के छठे अध्याय में वर्णन कर रखा है। आपने जो पूछा कि इन सबका निपटारा कैसे हुआ होगा, सो वह निपटारा विधिवत् हुआ है, उस समय में बड़े बुद्धिमान् और कुशल लोग थे, जिन्होंने इस सबका कुशलता से निदान किया था। अलम्।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

संस्था - समाचार

०१ मई से १५ मई २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं और अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, पुण्य तिथि एवं अन्य अवसरों से सबंधित विशेष मन्त्रों से आहूति भी दिलवायी जाती हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन किया जाता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं।

अमेरिका यात्रा के संस्मरण सुनाते हुए **आचार्य डॉ. धर्मवीर जी** ने कहा कि अमेरिका में सबसे बड़ा आर्य समाज ह्यूस्टन है। आर्य समाज के द्वारा विद्यालय भी चलाया जाता है। वहाँ के प्रधान श्री देव महाजन हैं। श्री महाजन जी ने बताया कि लोस एँजिल्स में आर्य समाज स्थापित कर भवन बनाया गया था, लेकिन चला नहीं सके इसलिये भवन बेच दिया गया। अब वहाँ प्रति घंटा की दर से किसी क्लब में किराये पर स्थान लेकर सत्संग करते हैं। आर्य समाज में पदाधिकारियों का चुनाव होने के कारण समाज में लड़ाई-झगड़े होते थे। क्योंकि चुनाव होने पर पदाधिकारी वही बनते हैं, जिनको अधिक मत प्राप्त होता है। बहुमत तो धनबल, बाहुबल और बुद्धिबल, गुटबाजी से प्राप्त होता है। चुनाव में अच्छा, बुरा गौण होता है। बहुमत के साथ यह शर्त नहीं है कि अच्छे लोगों का बहुमत हो। इसलिये यह आवश्यक नहीं कि चुनाव जीतकर पदाधिकारी बने व्यक्ति गुण, कर्म, स्वभाव से श्रेष्ठ (आर्य) हो सबकी उनमें श्रद्धा हो और वह लोकप्रिय हों। मतदान से श्रद्धा बनती नहीं। चुनाव प्रणाली के कारण कोई असामाजिक व्यक्ति भी समाज में घुस जाता है। प्रजातंत्र में कुछ अच्छाई भी है कि कोई अच्छा व्यक्ति जो सबसे पीछे है समय, श्रम, सुविधा से आगे आ सकता है। समाज में सब तरह के लोग आते हैं इसलिये आने वाले सभी लोग अच्छे हों यह अनिवार्य नहीं है। आर्य समाज वैधानिक दृष्टि से प्रजातंत्र में चलने वाली संस्था है। परिवार, समाज, संगठन को चलाने

के लिये मनुष्यों द्वारा बनाये गये कोई विधान शत-प्रतिशत ठीक हो, सारे लाभदायक हों और सदा लागू हो, यह सम्भव नहीं। वह बदलते ही रहता है, क्योंकि उनमें कुछ न कुछ कमी रहती है। वह ईश्वरीय नियमों की तरह अटल नहीं होता। ईश्वरीय नियम को बदल नहीं सकते, उन नियमों को तोड़ने पर तत्काल कष्ट भोगना पड़ता है। चुनाव के कारण डेढ़ रूपये चन्दा देने वाला डेढ़ करोड़ के सम्पत्ति का मालिक बन जाता है। जो व्यक्ति समाज स्थापित करता है, भवन निर्माण करवाता है उसके मर जाने या स्थानांतरित हो जाने से समाज का यथावत् संचालन नहीं हो पाता है। नये आने वाले व्यक्ति में श्रद्धा, निष्ठा, संस्था के सिद्धान्तों और उद्देश्य की ठीक-ठीक जानकारी हो तो काम चलता रहता है अन्यथा बंद हो जाता है। कहीं कहीं पर आर्य समाज व्यक्तिगत या पारिवारिक सम्पत्ति बनकर रह जाता है।

यज्ञोपरान्त प्रात:कालीन प्रवचन में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि ऋषियों की मान्यता है, ईश्वर हमारा सबसे बड़ा सुहृद है उससे बढ़कर हमारा कल्याण करनेवाला कोई नहीं है। संसार में कोई भी मनुष्य जैसे- माता, पिता, भाई, मित्र आदि ईश्वर के बराबर हितैषी नहीं हो सकता। इसलिये जो ईश्वर की शिक्षा, उपदेश को नहीं मानता, विपत्तियाँ उसके बहुत निकट होती है और वह अपने शत्रुओं को प्रसन्न करता है। हितैषियों की शृंखला में ईश्वर के पश्चात् ऋषि-महर्षि हमारे सुहृद हैं। ऋषियों के बाद हमारे माता-पिता हित चाहनेवाले होते हैं। माता-पिता के पश्चात् गुरु, आचार्यगण हमारे हित चिन्तक होते हैं। गुरुओं के बाद मित्रगण हित करने वाले हैं। किन्तु इन सबमें परमेश्वर ही सबसे बड़ा है, क्योंकि वह सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, अन्तर्यामी होने के कारण हमारे सबसे अधिक निकट है। न्यायदर्शन के प्रणेता महर्षि गौतम कहते हैं दुख का मूल कारण जन्म है। विषय भोगों को भोगने की इच्छा निरन्तर मन में बनी रहती है इसलिये बार-बार जन्म लेना पड़ता है। जन्म लेने या शरीर धारण करने का कारण प्रवृत्ति है। जब तक जन्म लेते रहेंगे तब तक शरीर के कारण दुख, पीड़ा भोगना ही पड़ेगा। वाणी, शरीर और मन से चेष्टा विशेष करने का नाम प्रवृत्ति है। मनुष्य अपने मन से तीन, शरीर से तीन और वाणी से चार प्रकार के अच्छे-बुरे कर्म करता है। इस प्रकार मन, वाणी और शरीर से दस प्रकार के अच्छे बुरे कर्म जीव करता है, यही प्रवृत्ति है। प्रवृत्ति के बने रहने का कारण अज्ञानता है। जो मनुष्य ईश्वर की न्याय व्यवस्था को देखकर संसार के विषय भोग के पीछे नहीं भागता, उसकी प्रवृत्ति नष्ट हो जाती है और वह जन्म-मृत्यु के चक्र से छूटकर परमानन्द को प्राप्त करता है। भर्तृहरि जी कहते हैं कि एक-एक जानवर रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द विषय को लेकर संसार में प्रवृत्त होता है। वह विषय उन जानवरों की मृत्यु का कारण बनता है। मनुष्य तो एक से संतुष्ट होता नहीं, किन्तु रूप-रस आदि पाँचों विषयों में प्रवृत्त होता है, फिर मृत्यु से कैसे बच सकता है? मनुष्य विषयों में थोड़ा-सा प्रवृत्त होता है। थोड़ा-थोड़ा प्रवृत्त होकर विषयों में पूर्ण रूप से डूब जाता है। जैसे थोड़ी-सी चिंगारी पूरे जंगल को जलाकर नष्ट कर देती है, वैसे ही विषय भोग रूपी थोड़ी-सी प्रवृत्ति भी जन्म रूप दुख का कारण बनती है। प्रवृत्ति का मूल कारण दोष है। राग, द्वेष और मोह ये तीनों दोष हैं और ये अत्यन्त दु:ख देने वाले हैं। किसी भी मनुष्य से राग, द्वेष या मोह होने के कारण उसके गुण, अवगुण ठीक से दिखाई नहीं देते हैं। दोष का कारण मिथ्याज्ञान या अविद्या है। पदार्थों के यथार्थ स्वरूप को न जानना ही मिथ्याज्ञान या अविद्या है। अविद्या से दोष, दोष से प्रवृत्ति, प्रवृत्ति से जन्म, जन्म से दुख होता है। जो दुखों से बचना चाहता है वह अपने अज्ञान को नष्ट करने में पूर्ण पुरुषार्थ करें।

आगे आपने बताया कि मनुष्य के शरीर और मन में अकड़न तथा असंतुलन होता है। शारीरिक अकड़न और असंतुलन को ठीक करना सरल होता है, किन्तु मन की अकड़न और संतुलन ईश्वर स्तुति, प्रार्थना और उपासना के बिना ठीक नहीं होता है। इसलिये जो अपने मन की अकड़न और संतुलन को सुधारना चाहते हैं वे ईश्वर की ओर बढ़ते हैं। पाँच प्रकार के मनुष्य परमेश्वर की भक्ति करते हैं-

१. जो परमेश्वर से अपनी रक्षा चाहता है। मनुष्य बचपन में माता की गोद मे अपने को सुरक्षित समझता है। बड़े होने पर पिता को अपना रक्षक मानता है। विचार करने योग्य होने पर माता-पिता को पूर्ण रक्षक नहीं मानता। राजा और उसकी सुरक्षा व्यवस्था भी एक सीमा तक ही रक्षा करता है। मित्र और भाई बन्धु हर स्थान पर हमेशा रक्षा नहीं कर सकते। इसलिये जो ईश्वर और उसके सामर्थ्य को जान लेता है वह उसकी भक्ति में लग जाता है।

२. विद्वान् बुद्धिमान् जो परमात्मा को संसार के कण-कण में व्याप्त जानता और मानता है, वही उसका गुण कीर्तन करता है। मानव शरीर, वृक्ष वनस्पति तथा संसार

के अन्य प्राकृतिक पदार्थों में अत्यंत सूक्ष्मतापूर्वक ईश्वर की निर्माण कला को केवल बहुत विचारशील व्यक्ति ही समझता है, मूर्ख मनुष्य नहीं समझ सकता।

३. जैसे यज्ञ में बैठने तथा पात्र आदि रखने के लिये कुशा (पवित्र घास) के आसन होते हैं, वैसे ही जो मनुष्य राग-द्वेष, मोह आदि को छोड़कर अपने हृदय को अत्यंत पवित्र करके परमात्मा का आसन बना लेता है वह ईश्वर की समीपता को प्राप्त करके निर्भीक हो जाता है।

४. जो व्यक्ति अपने सब दोषों को स्वीकार करके वैसे ही नष्ट कर देता है जैसे यज्ञाग्नि में हवि जल कर नष्ट हो जाती है। वह भी ईश्वर की स्तुति करके उसके निकट हो सकता है।

५. जो स्वयं को विद्या, परोपकार, जितेन्द्रियता आदि शुभगुणों से अलंकृत कर लेता है, वह ईश्वर की उपासना करने योग्य हो जाता है। ये पाँच प्रकार के मनुष्य अपने मन और शरीर की सब अकड़न, असंतुलन को ठीक कर सकते हैं।

शनिवार सायंकालीन सत्संग में परोपकारिणी सभा के मन्त्री **श्री ओममुनि जी** ने कहा कि मनुष्य को अपनी मनुष्यता कभी छोड़नी नहीं चाहिये। जब वह प्रलोभन, अज्ञान या पाखण्ड में फंस जाता है तब मनुष्यता छूट जाती है। जड़ पदार्थों, मूर्ति आदि को पूजने या उनके आगे झुकने से बुद्धि नष्ट होती है, चिन्तन करने का सामर्थ्य समाप्त हो जाता है। मूर्तिकार, मूर्ति बनाने के बाद इंच और फूट के हिसाब से मूर्ति को बेचता है। अनपढ़ लोगों के साथ ही पढ़े-लिखे लोग मूर्तिपूजक भी उसे खरीदकर अपने तथा अपने परिवार के धन और बुद्धि का नाश करते हैं। सोमनाथ के मन्दिर में विदेशी आक्रमणकारियों ने हमला किया तब सोमनाथ स्वयं को और मन्दिर को नहीं बचा सका। पुजारियों ने मूर्ति पर विश्वास किया और योद्धाओं को युद्ध नहीं करने दिया जिसके कारण सैकड़ों मनुष्य मारे गये। करोड़ों रूपये मूल्य के सोना, चाँदी, हीरे, मोती, पन्ना आदि लूटकर शत्रु अपने देश में ले गये। इसके विपरीत चेतन विद्वान्, बुद्धिमान, बलवान, धनवान मनुष्यों का सम्मान करने से आयु, विद्या, यश, बुद्धि, बल और धन बढ़ता है। मूर्तिपूजा के विपरीत देवयज्ञ-अग्निहोत्र करने से वातावरण में सुगंधि, पवित्रता तथा शरीर में आरोग्यता, धन, प्रतिष्ठा आदि प्राप्त होता है। संध्योपासना से आन्तरिक शान्ति मिलती है।

प्रात:कालीन सत्संग में **श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य जी** यजुर्वेद के इक्कीसवें अध्याय के मन्त्रों की व्याख्या करते हैं। इसके कुछ मन्त्र स्वस्तिवाचन में सम्मिलित है। **'सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहष.........'** मन्त्र की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी जी से पहले के किसी विद्वान् ने पूर्ण विश्वासपूर्वक यह घोषणा नहीं की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद में शिल्पियों द्वारा विशेष उत्तम जलयान बनाने की विद्या है, जिसकी कल्पना सृष्टि के आदि में कोई मनुष्य कर नहीं सकता था। इस मन्त्र में नाव/पानी जहाज बनाकर समुद्री यात्रा करने और देश-देशान्तर में जाने का उपदेश है, जिससे व्यापार आदि करके धन-धान्य की प्राप्ति हो, दूसरे स्थानों के रहन-सहन, संस्कृति का ज्ञान हो। उस नाव में आँधी तूफान वर्षा, लुटेरे डाकुओं से सब प्रकार की सुरक्षा के उपाय हों। वह नाव इतनी विस्तृत हो जिसमें बहुत मनुष्यों के लिये सुन्दर शयन कक्ष, सभा कक्ष, रसोई, भोजनालय, पानी, चिकित्सालय आदि की पर्याप्त व्यवस्था हो। व्यापारिक सामान रखकर लाने/ले जाने के लिये बड़ा स्थान हो। वह नाव शुभ प्रकाश वाली हो। उसमें सब ओर से वायु आ जा सके। वह नाव निर्माण के दोषों से रहित अखंडित हो। उसमें शक्तिशाली इंजन हो, वह जल में दोनों ओर ऊपर-नीचे (जल के प्रवाह और उससे विपरीत दिशा में) सरलता से चल सके। राजा और प्रजा कल्याण के लिये उसमें सुविधापूर्वक यात्रा कर सकें। उसमें बीच समुद्र में रुकने के लिये बहुत यन्त्र और अनेक लंगर होवें। नाव में कोई छेद न हो, पानी न भर सके। वह नाव कलात्मक आकृतिवाला अर्थात् देखने में बहुत सुन्दर हो।

आगे आपने बताया कि यजुर्वेद के दूसरे अध्याय के मन्त्रों में परिवार और समाज के श्रेष्ठ संचालन का उपदेश है। संसार के सभी समाज शास्त्री यह मानते हैं कि किसी मनुष्य को बचपन से एकांत में रखा जाये तो वह बोलना भी नहीं सीख पायेगा और गूंगा ही रह जायेगा। इसलिये सृष्टि के आदि में ही परमात्मा ने मनुष्यों को वेदज्ञान देकर उसे विचार करने योग्य बनाया। वेद में मानव जीवन की सम्पूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये सब विद्या है। मानव समाज के कल्याण की भावना से ही वेद में सब उपदेश हैं। अन्य मत-मतान्तरों के ग्रन्थों में मनुष्यों के पारिवारिक, सामाजिक जीवन के लिये विधि-विधान युक्त व्यवस्था नहीं मिलती है। जबकि सभी सम्प्रदाय के लोग अपने बच्चों को शिक्षित और सुस्थापित कर उनका सुखद भविष्य चाहते हैं। वेद में मानव जीवन के लिये सम्पूर्ण शिक्षा है, कहीं कोई न्यूनता नहीं है। परिवार, समाज, संगठन,

राष्ट्र के कुशल संचालन की जैसी शिक्षा वेद में है उसकी कल्पना साधारण मनुष्य नहीं कर सकता है। यह संसार परमेश्वरकृत है इसलिये इस संसार में सुखी रहने का सर्वोत्तम उपाय परमेश्वर ही अपने वेदज्ञान के माध्यम से सृष्टि के आदि में ही सब मनुष्यों को बताता है। संसार के सभी समाज शास्त्री इस निष्कर्ष पर पहुँच चुके हैं कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसके जीवन की चार प्रमुख आवश्यकताएँ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की पूर्ति समाज में रहकर ही हो सकता है। ईश्वर प्रदत्त स्वाभाविक ज्ञान के कारण पशु आदि प्राणी बिना सिखाये चलना, तैरना, उड़ना, खाना, पीना आदि सीख जाता है। किन्तु मनुष्य नैमित्तिक ज्ञान से ही सब व्यवहार सीखता है, इसलिये उसे परिवार और समाज की अत्यंत आवश्यकता होती है। मनुष्य बचपन में अपने माता-पिता पर पूर्ण रूप से निर्भर होता है। उठने, बैठने, चलने, खाने, पीने से लेकर शिक्षा प्राप्त कर जब तक वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के योग्य नहीं हो जाता, तब तक माता-पिता उसकी देखभाल करते हैं। जब परिवार में माता-पिता, दादा-दादी एवं अन्य लोग वृद्ध होकर धन कमाने योग्य नहीं रहते तब सन्तानों का उनके प्रति जो कर्तव्य है उसकी उत्तम शिक्षा भी वेद में ही है। वेद में परमात्मा सब गृहस्थ मनुष्यों को उपदेश करता है कि तुम लोग अपने बड़ों की सेवा ऊर्जा देने वाले स्वास्थय अनुकूल ताजा स्वादिष्ट भोजन, दूध, घी, शुद्ध जल, पके हुए फल, ऋतु अनुकूल वस्त्र, आवास, धन एवं मधुर वाणी से करके उनको तृप्त करो। जिससे वे सौ वर्ष तथा उससे अधिक समय तक भी निरोग रहते हुए जीवित रहें।

सायंकालीन सत्संग में उपदेश मंजरी पुस्तक पर चर्चा के क्रम में **उपाचार्य श्री सत्येन्द्र जी** ने कहा कि ध्यान के विषय में स्वामी दयानन्द जी का मत अत्यन्त सरल और स्पष्ट है। यह वेद और ऋषियों के अनुकूल होने के कारण व्यावहारिक तथा प्रामाणिक है। जैसे कान से सुने जाने वाले शब्द का कोई आकार नहीं होता किन्तु शब्द सुनते ही उसके अर्थ का ध्यान आता है। ऐसे ही आकाश निराकार है, किन्तु उसका ज्ञान होता है। इसी प्रकार ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, स्वरूप, ज्ञान, बल, क्रिया आदि को जो विद्वान् और उपासक जानता है वह उस निराकार परमेश्वर का ध्यान कर लेता है। अज्ञानी किसान आदि भी जानते हैं कि मानव शरीर या अन्य किसी प्राणी के शरीर से जीव निकलने पर उसका ज्ञान, सुख, दु:ख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न नष्ट हो जाता है। जीव निराकार होने कारण दिखाई नहीं देता है, लेकिन सबके ध्यान में अनायास आता है। इसी प्रकार ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव, स्वरूप का चिन्तन करने पर धारणा-ध्यान लगाना सरल हो जाता है। जो लोग ऐसा कहते हैं कि मूर्त पदार्थ के बिना ध्यान कैसे होगा? उनसे पूछना चाहिये कि शरीर में दर्द तथा अनेक प्रकार के रोग दिखाई नहीं देते फिर भी उसका ध्यान कैसे होता है? इसका उत्तर यही है कि जिस बात से मनुष्य प्रभावित होता है अथवा जिस का चिन्तन करता है, उसका ध्यान अपने आप ही हो जाता है। वैज्ञानिक लोग अत्यंत सूक्ष्म परमाणु पर प्रयोग करने के लिये उससे सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त करके ध्यान करते हैं और नई-नई खोज करके संसार को लाभान्वित करते हैं।

रविवारीय सायंकालीन सत्र में **ब्र. मनोज जी** ने कहा कि हमारे देश में अनेक मत के मानने वाले लोग रहते हैं। उन सबके धर्म ग्रन्थ अलग-अलग हैं। ईश्वरीय ग्रन्थ वेद को छोड़कर संसार के अन्य मत-मतान्तरों की पुस्तकों-पुराण, कुरान, बाइबिल आदि में सब विद्यायें नहीं हैं। वेद में धर्म, उपासना, शिक्षा, गणित, संगीत, कला, चिकित्सा, भोजन, भाषा-व्याकरण, शिल्प, गृह निर्माण, कृषि, पशुपालन, खनन, व्यापार, व्यवसाय, उद्योग, युद्ध कला, राजनीति, शासन व्यवस्था, मौसम और जलवायु, भूगोल, खगोल आदि सब विद्यायें हैं। वेद में विभिन्न प्रकार के दूरसंचार के यन्त्र, भूमि पर चलने वाले, जल और वायु में चलने वाले यान आदि बनाने और चलाने की विद्या है। पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सुख, शांति और समृद्धि के उपाय बताये गये हैं। इसमें मनुष्य जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिये सोलह संस्कारों का पूर्ण विधि-विधान है। वेद ईश्वरीय ग्रन्थ होने के कारण मनुष्यों को सृष्टि के आदि में ही प्राप्त हुए इसलिये इसमें मानवीय इतिहास नहीं हैं। पुराण, कुरान, बाइबिल आदि मनुष्य कृत ग्रन्थ हैं, क्योंकि ये नये हैं और इसीलिये इनमें मानवीय इतिहास तथा अनेक प्रकार के पक्षपात आदि दोष भरे हुए हैं।

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर- प्रति वर्ष की भाँति आर्य वीर दल अजमेर और परोपकारिणी सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में इसका आयोजन किया गया है। रविवार १५ मई को सायं ५ बजे राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विजय सिंह भाटी ने ध्वजारोहण करके इस शिविर का उद्घाटन किया। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी, कोषाध्यक्ष श्री सुभाष

नवाल जी, सभा के सदस्य एवं विद्वान् श्री सत्येन्द्र सिंह आर्य जी, विशिष्ट अतिथि डॉ. विकास शर्मा, उपाचार्य श्री सत्येन्द्र आर्य जी, स्वामी देवेन्द्रानन्दजी, मुमुक्षु मुनि जी, आर्य वीर दल के संयोजक, मन्त्री, प्रशिक्षक उपस्थित रहे। राजस्थान, मध्यप्रदेश, झारखंड से लगभग १०० से अधिक युवा, किशोर एवं बालक उद्घाटन समय तक आ चुके थे। एक सप्ताह चलने वाले इस शिविर में शिविरार्थियों को शारीरिक और बौद्धिक कक्षाओं के द्वारा राष्ट्र की संस्कृति, सुरक्षा एवं सेवा के लिए प्रशिक्षण दिया जायेगा।

*** डॉ. धर्मवीर जी की प्रचार यात्रा:-**

(क) ६-२७ मई २०१६ आई.आई.आई.टी. हैदराबाद

*** आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम:-**

(क) ०७ मई २०१६- आर्यसमाज धोलेडा, महेन्द्रगढ़, हरियाणा के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

(ख) ११-१३ मई २०१६ -आर्यसमाज सहागंज, जौनपुर, उ०प्र० के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता।

(ग) १४-१७ मई २०१६ -आर्यसमाज कण्डाघाट, हिमाचल प्रदेश के वार्षिकोत्सव में मुख्य वक्ता।

(घ) २०-२२ मई २०१६ -गाजियाबाद।

(ङ) २५-३१ मई २०१६ -आर्यसमाज मलाखा चौड, सवाई माधोपुर के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

*** आचार्य कर्मवीर जी का प्रचार:-**

(क) ०१ मई २०१६ -श्री इशमपाल जी आर्य, सीडकी, सहारनपुर में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग।

(ख) ०२ मई २०१६ -श्री रोशन जी आर्य, गांगनौली, सहारनपुर में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग।

- आर्यसमाज रूहालकी, हरिद्वार में सत्संग

(ग) ०३ मई २०१६ -श्री ओमपाल सिंह जी (सेवानिवृत्त सैनिक) रुड़की हरिद्वार के जन्मदिवस पर यज्ञ सत्संग।

(घ) १०-१२ मई २०१६ -डॉ. मित्तल, जयपुर के परिवार में सामवेद पारायण यज्ञ एवं वेदपाठी श्री प्रभाकर आर्य।

(ङ) १५-३१ मई २०१६ -संत निर्भयनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय बीकानेर में युवा निर्माण शिविर में प्रशिक्षक की भूमिका में।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-३५

उतागश्चक्रुषं देवा देवा जीवयथा पुनः।

मनुष्य ही है जो पाप कर सकता है। मनुष्य सदा श्रेष्ठता की परिस्थिति में नहीं रहता। उसका मन बहुत चञ्चल है, उसका वेग भी अधिक है। जैसे वायु वेग से चलती है तो उसके विपरीत चलना या उसे रोक पाना अत्यन्त कठिन होता है, इसी कारण गीता में इसके लिये **वायोरिव दुष्करं** कहा गया है। इस गतिशीलता के कारण उसे रोकना या स्थिर करना अत्यन्त कठिन होता है। जैसे तुला में सन्तुलन बनाना कठिन होता है, वह बहुत थोड़े हवा के झोंके से ही ऊपर नीचे होने लगती है, उसी प्रकार मन की स्थिति है। यह भी विचारों के अनुसार इधर-उधर होता रहता है, ऊपर-नीचे आता-जाता है।

मन को ऊपर की ओर ले जाने का यत्न करना पड़ता है। मन स्वयं तो भौतिक है, जड़ भी है, परन्तु सूक्ष्म तथा आत्मा के सन्निकट और सहायक होने के कारण उसे आत्मा के चैतन्य का सामर्थ्य प्राप्त है। जब आत्मा उसे निर्देशित नहीं कर रही होती तो वह भौतिक पदार्थों की ओर प्रवृत्त होता है। वास्तव में तो भौतिक पदार्थों से सम्पर्क करने के लिये और उन्हें जानने के लिये ही उसे बनाया गया है, इस कारण वह भौतिक पदार्थों की ओर आकृष्ट हो, यह स्वाभाविक है। भौतिक पदार्थों के जितने प्रकार हैं, उन्हें शरीर की पाँच इन्द्रियों से ही जाना जाता है। इन्द्रियाँ जहाँ आत्मा के लिये काम करती हैं, वहीं आत्मा के माध्यम से शरीर के लिये भी काम करती हैं। कब उन्हें आत्मा के लिये काम करना है और कब शरीर के लिये- इसका निर्णय मन नहीं करता, उसे आत्मा करती है और इस कार्य में वह बुद्धि की सहायता लेती है। यही वह अवसर है, जब मन को एक कार्य से हटाकर दूसरे कार्य की ओर प्रवृत्त करना होता है। जब आत्मा इस कार्य को नहीं कर रही होती है, तो हम कहते हैं- मन ऐसा कर रहा है। मन तो ठीक ही कर रहा है, वह अपना कार्य कर रहा है। आत्मा का कार्य है- उसे अनावश्यक से हटाकर आवश्यक और अपेक्षित की ओर लाये।

जब ऐसा नहीं हो पाता, तब हम उस कार्य को करने लगते हैं। जब वह कार्य शरीर या मन के स्तर पर हमारे लिये हानिकारक होता है, तब वह हानि ही पाप कहलाती

है। इस हानि को हम सावधान होकर ही रोक सकते हैं। इस प्रयत्न को करने के लिए आत्मा को जागना होता है, मन को रोकना होता है। जो क्षति हो गई है, उस की पूर्ति करने का प्रयास करना होता है। यह परिस्थिति हमारे श्रेष्ठ विचारों के द्वारा ही सम्भव है। ये विचार कभी हमारे अन्दर से आते हैं, कभी बाहर से उन्हें लाने का, जगाने का प्रयास किया जाता है। बाहर के इन प्रयासों में सहायक लोग देव हैं, जो हमारे अन्दर के दिव्य सामर्थ्य को जाग्रत करते हैं, नीचे की ओर, पाप की ओर जाते हुए मन को उच्चता की ओर प्रेरित करते हैं। हम मन के द्वारा ही नीचे की ओर जाते हैं। नीचे जाने का कारण मन ही है, अतः उसे ही मोड़ना होगा। यह सामर्थ्य दिव्य विचारों में है, उन देवताओं में है, जो हमें ऐसे विचार दे सकते हैं।

यहाँ पर हमें एक तथ्य समझ लेना चाहिये कि हम सदा नीचे गिरने के लिये मन को दोषी मानते हैं। जब मन भौतिक है तो उसके जड़ होने की अनिवार्यता है। जड़ वस्तु कितनी भी बड़ी और शक्तिशाली क्यों न हो, उसमें विवेक, निर्णय या विचार का सामर्थ्य नहीं होता, फिर मन में निर्णय का सामर्थ्य कैसे आ सकता है? मन शक्तिशाली है, पर क्या वह आत्मा से अधिक सामर्थ्यवान है? चाहे संसार के सारे पदार्थ भी एक ओर हो जायें तो वे चेतना की बराबरी नहीं कर सकते, फिर मन का क्या सामर्थ्य है कि वह अपनी इच्छा से आत्मा को चलाये? जो आत्मा जड़ मन को भी चैतन्य का भान करा सकती है, वह स्वयं जड़ मन के साथ जड़ कैसे बन सकती है? अतः गलती, अपराध, पाप आदि मन के कारण नहीं, आत्मा के कारण ही होते हैं। आत्मा विवेक का उपयोग नहीं करती, अपितु अनुचित की इच्छा करती है, उसे अच्छा मानती है, तभी तो पाप में प्रवृत्त होती है। जब आत्मा पाप को अनुभव करती है, उसे पाप के रूप में पहचानती है, तब उसे वह कभी भी स्वीकार नहीं कर सकती। जो मनुष्य एक बार आग से जल चुका हो, वह जान-बूझकर आग में हाथ डालेगा, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती। अतः मन ऐसा करता है- यह कथन शरीर या मन के स्तर पर हमारी आत्मिक दुर्बलता को ही प्रकट करता है। वस्तुतः ऐसा कहना मिथ्या ही है।

यदि मन अपने-आप कार्य करने में स्वतन्त्र होता तो उसके लौटने की सम्भावना ही समाप्त हो जाती। वह जो चाहता है, उसे छोड़कर विपरीत दिशा में क्यों जाता? मन का भौतिक विषयों की ओर जाना इस कारण स्वाभाविक है कि वह भौतिक तत्त्वों से बना है। वह आत्मा का साधन है, उसे जो भी सामर्थ्य प्राप्त है, आत्मा के कारण ही प्राप्त है। जब जड़ शरीर आत्मा के कारण चेतन बना हुआ है और आत्मा से पृथक् होते ही जड़ दिखाई देने लगता है, तब जड़ मन के चेतन प्रतीत होने में क्या बाधा है? यह शरीर भी तभी तक चेतन लगता है, जब तक चैतन्य से संयुक्त होता है। इस कार्य के समाप्त होने पर आत्मा इसको त्याग देती है, उसी प्रकार जड़ मन भी जब तक आत्मा के लिये उपयोगी होता है, जब तक चेतन बना रहता है। उसका उपयोग आत्मा प्रलय तक अथवा मुक्ति तक करती है, तब तक वह आत्मा के अनुसार चलता है फिर नष्ट हो जाता है। यही सामर्थ्य इस मन्त्र भाग में वर्णित है। हम दिव्य विचारों से पाप को छोड़कर, मृत्यु से बचकर जीवन को प्राप्त कर सकते हैं।

क्रमशः ....

परोपकारिणी सभा एवं आर्यवीर दल राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में

सम्भाग स्तरीय आर्य वीरांगना शिविर

का भव्य आयोजन

दिनांक : ३० मई २०१६ सोमवार से ०५ जून २०१६ रविवार तक

स्थान : ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर (राज.)

सम्पर्क सूत्र : ०९४६००१६५९०

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश प्रारम्भ- आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, म.प्र. में कक्षा ६ व ७ में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारम्भ हो चुके हैं। इच्छुकजन दिनांक ५ जून से १५ जुलाई २०१६ के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र- ०९९०७०५६७२६, ०९४२४४७१२८८**

२. प्रवेश सूचना- गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बद्ध गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुरमें कक्षा ६ से ११ और बी.ए. प्रथम वर्ष की प्रवेश परीक्षा २६ जून २०१६ को प्रातः १० बजे आयोजित होगी। इसमें आधुनिक विषयों के साथ-साथ संस्कृत को मुख्यविषय के रूप में पढ़ाया जाता है। सम्पूर्ण निःशुल्क शिक्षा, आवास, पाठन, भोजन इत्यादि, सम्पूर्ण संस्कृतमय वातावरण, अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर को पढ़ाने की विशेष सुविधा, समय-समय पर आर्य विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान, मल्टीमीडिया एवं पुस्तकालय की विशेष सुविधायुक्त। नियमावली प्राप्त करने की तिथि १ मई से २५ जून २०१६ तक। आवश्यक दस्तावेज आधार कार्ड, निवास प्रमाण पत्र, आयु प्रमाण पत्र, स्वास्थ्य प्रमाण साथ लावे। परीक्षा उपरान्त गत परीक्षा का प्रमाण पत्र, चरित्र प्रमाण पत्र, पासपोर्ट आकार के चार छायाचित्र। **सम्पर्क सूत्र- ०१८१-२७८२२५२-४९, ०९८७६९९७०७१, वाटअप-०९९८८१६३२३९, ई मेल- gurukulkatarpur@gmail.com**

वैवाहिक

३. वर चाहिये- आर्यसमाजी परिवार, संस्कारित, जन्म तिथि- १९८८ वर्ष, कद- ५ फुट ३ इंच, रंग- गौर वर्ण, शिक्षा- एम.ए., बी.एड., संगीत लैक्चरार युवती हेतु आर्यसमाजी परिवार का संस्कारित युवक चाहिए। **सम्पर्क- ०७७३७६६१७३०**

चुनाव समाचार

४. आर्य समाज मुरैना, म.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- डॉ. ज्ञानशंकर शर्मा, **मन्त्री**- श्री विजयेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, **कोषाध्यक्ष**- आचार्य घनश्यामसिंह आर्य को चुना गया।

५. आर्य समाज सैक्टर-३५ व ४३, चण्डीगढ़ के चुनाव में **प्रधाना**- श्रीमती उषा गुप्ता, **मन्त्री**- श्री वेदप्रकाश आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्रीमती सरोज बाला को चुना गया।

शोक समाचार

६. जगाधरी वर्कशॉप, जि. यमुनानगर के संस्थापक मन्त्री **श्री केशवदास आर्य** नहीं रहे। उनका देहान्त १६ अप्रैल को हुआ। उन्होंने वैदिक जीवन भरपूर जिया। वे सिद्धान्तनिष्ठ व शालीन, सक्रिय आर्य थे। उनके मृत शरीर पर परिवार ने ७० किलो घृत, १३० किलो हवन सामग्री व अन्य सुगन्धित पदार्थों से 'संस्कारविधि' में दिए वेद मन्त्रों के उच्चारण में अन्त्येष्टि संस्कार किया। इस अवसर पर भारी संख्या में नर-नारी एकत्रित थे। शोक सभा में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री देवव्रत व वैदिक मिशनरी पं. इन्द्रजित् देव ने मृत्यु, कर्मफल एवं स्वर्गीय के गुणों पर प्रकाश डाला। स्व. केशवदास जी की अस्थियाँ गुरुकुल यमुनानगर में गड्ढा खोदकर स्थापित की गईं जबकि राख को गुरुकुल के खेतों में बिखेर दिया गया।

७. इन पंक्तियों के लेखक के अभिन्न मित्र एवं अग्रज और आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वान्, लेखक, वक्ता तथा पत्रकार स्व. पं. देवदत्त बाली-देहरादून की धर्मपत्नी **श्रीमती सरला बाली** का लगभग ८६ वर्ष की आयु में १८ मई २०१६ को प्रातः निधन हो गया। वर्षों से उनका स्वास्थ्य दुर्बल चल रहा था। उनका अन्तिम संस्कार स्थानीय श्मशान लक्खी बाग, देहरादून में शाम ५ बजे पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनके एक मात्र पुत्र श्री राकेश बाली आई.ए.एस. का पदस्थापन पिछले कई वर्षों से अण्डमान निकोबार में चल रहा था, परन्तु वे इन दिनों कार्यलयी काम से नई दिल्ली आए हुए थे। अतः श्री राकेश जी अपनी सहधर्मिणी श्रीमती प्रेरणा बाली के साथ अन्त्येष्टि के समय देहरादून पहुँच गए। बड़ी संख्या में स्थानीय आर्य सज्जन एवं देवियाँ दाह-संस्कार के समय श्मशान-स्थल पर पहुँचे।

स्व. पं. देवदत्त बाली प्रतिष्ठित सामाजिक व्यक्ति थे। आर्य समाज देहरादून, जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा देहरादून, तपोवन वैदिक साधन आश्रम देहरादून के वे मन्त्री और प्रधान आदि पदों पर वर्षों कार्यरत रहे। आपके मित्रों का दायरा भी बहुत विस्तृत था। सुदूर नगरों में रहने वाले उनके कई मित्रों के बालक देहरादून में हॉस्टल में रहकर पढ़ते थे। उन बच्चों के स्थानीय अभिभावक बाली जी ही हुआ करते थे और दो, चार, छह दिन की छुट्टियाँ ऐसे बालक आपके घर पर ही बिताते थे। यह कार्य श्रीमती सरला बाली जी की असाधारण सहजता, सरलता और अतिथि सेवा भावना के कारण ही सम्भव होता था। मेरा भी बड़ा सुपुत्र नीरज वर्ष १९७७-८० के मध्य देहरादून में अध्ययनरत था और उसने उनके स्नेह का भरपूर लाभ उठाया। ऐसी उदारमना देवी को परोपकारी परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

- सत्येन्द्र सिंह आर्य